विज्ञान से अध्यात्म तक

नरदेव आर्य

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Nardev Arya 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-159-7

Cover design: Anuj
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: June 2026

मेरी प्रिय मित्र मेरी पत्नी
सैमी ढिल्लन के नाम —
जिनके साथ ने सिखाया कि
प्रेम केवल साथ रहना नहीं,
बल्कि एक-दूसरे की चेतना
को उच्चतम स्तर तक
ले जाना ही सच्चा प्रेम है।

प्रस्तावना

इस कहानी की शुरुआत एक छोटी-सी जिज्ञासा से होती है। इतनी हल्की कि अक्सर हम उसे नज़रअंदाज़ कर देते हैं पर वही जिज्ञासा, जब ठहरकर सुनी जाए, तो धीरे-धीरे एक प्रश्न बनती है...और प्रश्न अगर ईमानदारी से जिया जाए तो वह हमें बदलने लगता है।

मेघा की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। उसके सवाल शुरू में साधारण हैं — दैनिक जीवन से जुड़े, सहज और अनकहे। पर समय के साथ, वही सवाल गहराते जाते हैं। वे सिर्फ उत्तर नहीं खोजते, बल्कि उस दृष्टि को बदलने लगते हैं जिससे हम जीवन को देखते हैं। यह कहानी केवल मेघा की नहीं है। यह हर उस व्यक्ति की कहानी है, जिसने कभी रुककर सोचा है — कि जो दिख रहा है, क्या वही पूरा सत्य है ?

और अगर हमने कभी ऐसे प्रश्न नहीं पूछे...तो शायद यह कहानी हमें वैसा बनने का निमंत्रण देती है — जिज्ञासु, सजग, और भीतर की ओर देखने वाला।

इस पुस्तक के माध्यम से एक सरल, पर गहन यात्रा को समझने का प्रयास किया गया है — एक ऐसी यात्रा, जो जीवन को देखने के चार अलग-अलग आयामों से होकर गुजरती है। पहला आयाम है विज्ञान, जो हमें सिखाता है कि 'कैसे' को समझा जाए — दुनिया के नियम, संरचना और कारण।

दूसरा है धर्म जो 'क्या सही है' का बोध कराता है—जीवन को जीने के मूल्य और दिशा। तीसरा आयाम है दर्शन जो 'क्यों' के प्रश्न को उठाता है — अर्थ, उद्देश्य और अस्तित्व की खोज और अंततः आता है अध्यात्म, जहाँ प्रश्न और उत्तर दोनों पीछे छूटने लगते हैं — और व्यक्ति स्वयं को अनुभव करने लगता है।

यह पुस्तक किसी निष्कर्ष पर पहुँचने का दावा नहीं करती। बल्कि यह केवल एक दिशा दिखाती है—जहाँ प्रश्न दबाए नहीं जाते बल्कि उन्हें जीया जाता है। यदि इस यात्रा के दौरान कहीं भी आपको लगे

कि मेघा के प्रश्न आपके अपने हैं…तो समझिए, यह कहानी अपना काम कर रही है।

आभार

सबसे पहले, मैं अपने दो घनिष्ठ मित्र घनेन्द्र यादव एवं निखिल कौशिक का आभार व्यक्त करता हूँ। उनके सहयोग, विश्वास और निरंतर साथ के बिना इस पुस्तक का लेखन संभव नहीं था। मैं अपने माता-पिता और बहनों का हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने बचपन से ही मुझे ऐसा वातावरण दिया जहाँ सोचने, समझने और जीवन को विभिन्न आयामों में देखने की स्वतंत्रता मिली।

उन्हीं के कारण मैं इस यात्रा को महसूस कर पाया और शब्दों में ढाल सका। अंत में, मैं जीवन का आभार व्यक्त करता हूँ—जिसने हर प्रश्न के साथ मुझे थोड़ा और गहराई में उतरना सिखाया।

कभी-कभी यात्रा ही उत्तर बन जाती है…और शायद, हम उत्तर खोजते – खोजते आख़िरकार खुद तक ही पहुँचते हैं।

अनुक्रमणिका

अध्यय 1 जिज्ञासा का जन्म : जहाँ एक छोटा-सा सवाल, एक पूरी यात्रा की शुरुआत बन जाता है। 1

अध्याय 2 विज्ञान का अद्भुत संसार : जब 'कैसे' के उत्तर मिलते हैं... पर 'क्यों' अभी भी बाकी रहता है।.. 55

अध्याय 3 आस्था के पीछे का विज्ञान : क्या विश्वास सिर्फ मान लेना है, या उसके पीछे भी कोई गहरी संरचना छिपी है ?.. 84

अध्याय 4 दर्शन के पथ : जहाँ हर उत्तर एक नया प्रश्न बन जाता है... और सोच की सीमाएँ टूटने लगती हैं।.. 113

अध्याय 5 स्वयं की यात्रा : जब खोज बाहर से हटकर भीतर मुड़ती है... और सब कुछ बदलने लगता है।.. 142

अध्यय 1

जिज्ञासा का जन्म : जहाँ एक छोटा-सा सवाल, एक पूरी यात्रा की शुरुआत बन जाता है।

शहर की सुबह – भागते समय के बीच एक ठहराव

शहर कभी नहीं सोता। वह तो बस अपनी रफ्तार का रंग बदलता है। रात की चकाचौंध भरी कृत्रिम रोशनी धीरे-धीरे फीकी पड़ रही थी, और इधर पूर्व में उगते सूरज की हल्की सुनहरी आभा इमारतों की ऊँची दीवारों से टकराकर बिखर रही थी। पर शहर… वह तो पहले से ही जाग चुका था।

नीचे सड़क पर जीवन एक अजीब और न रुकने वाली दौड़ में भाग रहा था।

कारों की कतारें, बसों में धक्का-मुक्की, हॉर्न की तीखी आवाज़ें—सब मिलकर एक ऐसा संगीत रच रहे थे जिसमें लय तो थी, पर सुकून वाली नहीं सिर्फ परेशान करने वाली। मानो हर व्यक्ति किसी अदृश्य चीज को पाने में समय से लड़ रहा था , और पल पल वो उसके हाथ से फिसलता जा रहा हो।

तीसरी मंज़िल की एक छोटी-सी बालकनी में खड़ी मेघा यह सब देख रही थी। उम्र पंद्रह वर्ष थी, पर उसकी आँखों में उम्र से कहीं अधिक प्रश्न चमकते रहते थे।

वह अक्सर इस शहर का यूँ ही खड़े-खड़े अवलोकन करती रहती थी—जैसे वह कोई दृश्य नहीं, बल्कि एक पहेली हो, जिसे वह सुलझाना चाहती हो।

तभी नीचे नज़र पड़ी तो देखा एक आदमी बैग एक कंधे पे लटका हुआ , शर्ट आधी अन्दर आधी बहार और माथे पर अनगिनत परेशानियों के बोझ के साथ दौड़ता हुआ बस पकड़ने की कोशिश कर रहा था। जैसे तैसे बस के दरवाजे तक पहुंचा ही था की पैर फिसल गया। थोडा लडखडाया पर जल्द ही खुद को संभाला और फिर से दौड़ना शुरू कर दिया।

लेकिन बस की भी तो अपनी भागादौड़ी थी और इतनी देर में वो भी अपने अगले गंतव्य के लिए चल पड़ी थी।

वह आदमी वहीं खड़ा रह गया—कुछ क्षणों के लिए रुक गया एकदम शांत।

फिर घड़ी देखी... और दूसरी दिशा में दौड़ने लगा।

ये वाकिया देख मेघा के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आई... और फिर वही मुस्कान एक प्रश्न में बदल गई।

इतनी जल्दी किस बात की है... ?

धीरे से रेलिंग पर हाथ टिकाकर ऊपर आसमान की ओर देखा शायद इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने के लिए।

पर आसमान... वो अभी पूरा नहीं था।

बस एक टुकड़ा था—इमारतों के बीच फँसा हुआ।

नीला... और अधूरा।

उसने आँखें थोड़ी सिकोड़कर उसे देखने की कोशिश की, जैसे वह उस छोटे-से टुकड़े में पूरा आकाश ढूँढ़ लेना चाहती हो।

पर ये संभव नहीं था।

तभी पीछे से उसकी मम्मी की आवाज़ आई—

मेघा ! उठ गए बेटा ? स्कूल नहीं जाना क्या आज ?

मेघा ने बिना पीछे मुड़े देखे तुरंत कहा—

हाँ मम्मी... बस आ रही हूँ।

पर उसके पैर तो जैसे जम ही गए थे।

उसने एक बार फिर नीचे देखा।

अब तो सड़क और भी व्यस्त हो चुकी थी।

एक बच्चा कंधे पर भारी बैग , हाथ में पानी की बोतल लिए अपने पापा के कदमो की बराबरी करता हुआ चल रहा था।

एक महिला फोन पर बात करते करते ऑटो में बैठ रही थी।

उधर सड़क किनारे दो आदमी किसी बात पर बहस करते-करते आगे बढ़ रहे थे।

हर किसी के पास कुछ न कुछ था—

एक काम, एक चिंता या एक लक्ष्य।

पर.....

किसी के पास भी रुकने का समय नहीं था। और वो शायद रुकना चाहते भी नही थे।

मेघा ने एक गहरी साँस लेकर इन सब दृश्यों को पचाने की कोशिश की लेकिन साँस ढंग से भीतर पहुँची ही नहीं।

हवा में शायद एक अजीब-सा भारीपन था—धूल, धुआँ और न जाने कितनी ही थकानो का मिश्रण।

एक हल्की सी खांसी ने सब गले से नीचे उतारने में मदद की और मेघा तुरंत अंदर चली आई।

कमरे में आकर उसने खिड़की बंद की।

कुछ क्षणों के लिए लगा—जैसे उसने बाहर के शोर को बंद कर दिया है।

पर वह शोर उसके अंतर्मन में भीतर तक आ चुका था।

मेज़ पर रखी किताबों की ओर उसकी नज़र पड़ी..

विज्ञान की किताब…

इतिहास की किताब…

गणित की कित्ताब ....

और एक छोटी-सी नोटबुक, जिसमें वह कभी-कभी अपने सवाल लिखती थी।

धीरे से कुर्सी पर बैठकर उसने नोटबुक खोली।

पहले पन्ने पर लिखे कुछ पुराने सवालों को देखा —

हम क्यों जीते हैं ?

मृत्यु के बाद क्या होता है ?

क्या जो हम देखते हैं वही सच है ?

थोड़ी देर के विराम के बाद उसने फिर पेन उठाया… और नीचे एक नया सवाल लिख दिया—

क्या जीवन सिर्फ भागना ही है…

या उसे रुककर समझना भी जरूरी है ?

वो एक बार फिर से अपने इस नए सवाल में डूब गयी।

तभी बाहर से एक तेज़ हॉर्न की आवाज़ ने उसे जगा दिया।

खिड़की की ओर देखा—

पर इस बार वह उठी नहीं।

वह बस बैठी रही।

चुप।

स्थिर।

लेकिन अब भीतर—

धीरे-धीरे कुछ जग रहा था।

शायद अबकी बार ये बेचैनी नहीं थी …

बल्कि एक खोज थी।

उसे अभी नहीं पता था—

कि यह छोटा-सा सवाल ही उसकी दुनिया बदलने वाला है।

यह शहर, जिसे वह रोज़ देखती है…

अब वैसा नहीं रहेगा।

और वह खुद भी नहीं।

घर जहाँ सब साथ है फिर भी सब अपने अपने में

मेघा के लिए उसके कमरे से बाहर निकलते ही एक अलग ही दुनिया शुरू हो जाती थी।

उसकी दुनिया तो वो सब विचार थे जिनमे वो बड़ी मग्नता में डूबी हुई थी—शांत, स्थिर, भीतर की ओर मुड़ी हुई।

पर घर का वातावरण बिल्कुल अलग था।

रसोई से बर्तनों की आवाज़ आ रही थी। गैस पर कुछ पकने लग रहा था, जिसकी खुशबू पूरे घर में फैल रही थी।

ड्रॉइंग रूम में टीवी अपना राग अलाप रहा था—कोई समाचार, जिसमें शब्दों से अधिक शोर था।

और इन सबके बीच—समय फिर से तेज़ हो गया था।

मेघा, जल्दी करो ! मम्मी की आवाज़ आई।

वह रसोई में खड़ी थीं—एक हाथ से पराठा सेकते हुए, दूसरे हाथ से टिफ़िन तैयार करते हुए। चेहरे पर हल्की-सी थकान , पर उससे कहीं अधिक एक स्नेह था, जो हर काम के साथ सहज ही जुड़ा रहता था।

मेघा ने दरवाज़े के पास कुछ क्षण खड़ी होकर मम्मी को ध्यान से देखा—

वह हर दिन ऐसे ही व्यस्त रहती थीं।

सुबह से लेकर रात तक, एक काम से दूसरे काम के बीच बिना रुके चलती हुई।

क्या मम्मी कभी रुकती नहीं होंगी… ? एकदम फिर से एक नया प्रश्न उसके मन में आया।

क्या सोच रही हो ? मम्मी ने अचानक उसकी ओर देखकर पूछा।

कुछ नहीं मम्मी , एक प्यारी सी मुस्कान के साथ मेघा ने कहा।

मम्मी ने भी मुस्कुराकर टिफ़िन उसके हाथ में दिया—

भोजन पूरा खाना, और आज देर मत करना।

मेघा ने सिर हिला दिया।

तभी पीछे से उसके पिता की आवाज़ आई—

मेघा !

पीछे मुड़कर देखा तो पिता दरवाज़े के पास खड़े थे—पूरी तरह तैयार, हाथ में बैग, आँखों में दिन भर की योजनाएँ।

बस का टाइम हो गया है, उन्होंने घड़ी देखते हुए कहा।

हर दिन लेट होना अच्छी आदत नहीं है।

उनकी आवाज़ सख्त नहीं थी…

पर उसमें एक ऐसी गंभीरता थी, जो अपने आप ही अनुशासन बना देती थी।

मेघा उनके पास आई।

जी पापा, उसने धीरे से कहा।

पिता ने एक क्षण उसे देखा—जैसे कुछ कहना चाहते हों…

पर फिर चुप रह गए।

उन्होंने बस उसके सिर पर हल्का-सा हाथ रखा और दरवाज़ा खोलकर बाहर निकल गए।

दरवाज़ा बंद होने की यह आवाज बहार और अन्दर की दुनिया में एक छोटी सी पर स्पष्ट रेखा खींचती हुई पूरे घर में गूँज गयी।

मेघा कुछ पल वहीं खड़ी रही।

फिर उसकी नज़र कमरे के उस कोने पर गई जहाँ उसकी दादी बैठी थीं।

पुरानी लकड़ी की कुर्सी पर, सीधे, शांत…

हाथ में माला, आँखें आधी बंद।

उनके चारों ओर एक अलग-ही शांति थी—

मानो उनके पास आकर समय भी थोड़ा धीमा पड जाता हो।

आओ बेटा ! ,उन्होंने आँखें खोले बिना ही कहा।

मेघा उनके पास गई और चुपचाप बैठ गई।

कुछ क्षण दोनों के बीच मौन रहा।

फिर दादी ने एकाएक धीरे से पूछा—

मन में क्या चल रहा है ?

मेघा थोड़ी चौंकी।

आपको कैसे पता ? उसने हल्के आश्चर्य से पूछा।

दादी ने आँखें खोलीं और मुस्कुराईं—

जो बाहर नहीं कहा जाता… वह अंदर ज़्यादा सुनाई देता है।

मेघा ने उनकी ओर देखा।

उनकी आँखों में एक अजीब-सी स्थिरता थी—

न जल्दी, न चिंता… बस एक शांत समझ।

दादी… मेघा ने धीरे से कहा,

लोग इतने जल्दी में क्यों रहते हैं ?

दादी ने माला का एक मनका आगे बढ़ाया।

क्योंकि उन्हें लगता है कि अगर वे रुक गए…

तो कुछ छूट जाएगा।

और अगर वे नहीं रुके… तो ? मेघा ने पूछा।

दादी ने उसकी आँखों में देखा—

तो शायद…

वे खुद ही छूट जाएँगे।

मेघा चुप हो गई।

यह उत्तर सरल था…

पर उसके भीतर गहराई थी।

वह पूरी तरह समझ नहीं पाई…

पर उसे लगा—इसमें कुछ ऐसा है, जिसे वह आगे कभी समझेगी।

रसोई से मम्मी की आवाज़ फिर आई—

मेघा ! बस आ जाएगी !

मेघा उठी।

उसने एक बार फिर दादी की ओर देखा।

फिर बिना कुछ कहे बाहर की ओर बढ़ गई।

दरवाज़ा खुला।

बाहर वही शहर था—

वही शोर, वही दौड़।

पर अब उसके भीतर—

कुछ थोड़ा बदल चुका था।

एक छोटा-सा सवाल…

और उसके साथ एक हल्की-सी बेचैनी—

जो अब सिर्फ देखने तक सीमित नहीं थी…

बल्कि सब समझना चाहती थी।

यात्रा –- साथ, सवाल और हल्की हंसी

सड़क पर कदम रखते ही शहर ने मेघा को फिर अपनी रफ्तार में समेट लिया।

बस स्टॉप पर पहले से ही कुछ बच्चे खड़े थे—कंधों पर बैग, आँखों में थोड़ी चमक और मन में आने वाली घंटियों की हल्की-सी चिंता।

कुछ ही क्षणों में स्कूल बस आकर रुकी।

दरवाज़ा खुला।

बच्चे एक-एक करके अंदर चढ़ने लगे।

मेघा भी बस में चढ़ी और सीधे पीछे की ओर बढ़ गई—जैसे उसे बिना देखे भी पता हो कि उसकी जगह कहाँ है।

खिड़की के पास वाली सीट पर स्नेहा पहले से बैठी थी।

उसकी नोटबुक खुली हुई थी—पन्नों पर त्रिकोण, कोण और इन पर आधारित परिमेय के सवाल बिखरे हुए थे। वह तेज़ी से कुछ हल कर रही थी, जैसे समय कम हो और सवाल ज़्यादा।

अभी भी ? मेघा ने बैठते हुए पूछा।

हाँ, स्नेहा ने बिना ऊपर देखे कहा,

आज त्रिकोणमिति का टेस्ट है।

पता है, मेघा ने खिड़की से बाहर देखते हुए कहा।

स्नेहा ने पेन रोककर उसकी ओर देखा—

तो फिर इतना शांत क्यों बैठी हो ?

मेघा ने हल्का-सा चेहरा बनाया—

क्योंकि… मुझे ये चैप्टर बिल्कुल पसंद नहीं है।

स्नेहा कुछ पल उसे देखती रही…

फिर बोली—

मुझे भी !

दोनों एक-दूसरे को देखती हैं…

और फिर एक साथ हँस पड़ती हैं।

बस धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी।

ये sin, cos, tan… मेघा ने कहा,

ऐसा लगता है जैसे किसी ने वर्णमाला खत्म होने के बाद नए अक्षर बना दिए हों।

और सबसे बड़ी समस्या , स्नेहा ने तुरंत कहा,

एंगल बदलते रहो, फार्मूला बदलते रहो… पर आंसर वही चाहिए जो बुक में है।

हाँ ! मेघा हँसते हुए बोली,

और अगर एक स्टेप भी अलग हो गया, तो—

दोनों ने एक साथ कहा—

—'रोंग मेथड !'

दोनों फिर से हँस पड़ीं।

मैडम का फेवरेट डायलोग , स्नेहा ने हँसते हुए कहा।

और वो लुक … मेघा ने आँखें थोड़ी बड़ी करके हूब - हू नकल की।

स्नेहा हँसते-हँसते बोली—

बस वही देख लो, आधे मार्क्स वैसे ही कट जाते हैं।

कुछ क्षणों तक बस में उनकी हल्की-हल्की हँसी गूँजती रही।

फिर स्नेहा ने फिर से नोटबुक की ओर देखा।

चल, एक सवाल पूछती हूँ, उसने कहा।

पूछो, मेघा ने कहा।

अगर $\tan \theta = 1$ है, तो θ क्या होगा ?

45 डिग्री , मेघा ने तुरंत कहा।

बहुत बढ़िया !, स्नेहा ने सिर हिलाया,

कम से कम बेसिक तो आता है।

बेसिक नहीं आता तो मैं यहाँ बैठी ही क्यों होती ? मेघा ने मुस्कुराकर कहा।

सही बात है, स्नेहा ने कहा,

पर तुम ना… प्रेक्टिस कम करती हो।

मेघा ने खिड़की के बाहर देखते हुए कहा—

मुझे सवाल सोल्व करना अच्छा लगता है…

पर ये बात समझना कहीं ज़्यादा अच्छी लगती है कि ये ऐसे क्यों है।

फिर शुरू हो गई, स्नेहा ने हँसते हुए कहा,

ये ‘क्यों’ एग्जाम में नहीं आएगा क्या ?

पता है, मेघा ने धीरे से कहा,

पर शायद… असली चीज़ वही है।

स्नेहा कुछ क्षण चुप रही।

उसने पहली बार नोटबुक बंद कर दी।

तुम अलग हो, उसने धीरे से कहा।

अच्छी तरह या बुरी तरह ? मेघा ने पूछा।

स्नेहा ने हल्की मुस्कान के साथ कहा—

अभी डीसाइड नहीं किया… पर इंट्रेस्टिंग हो।

मेघा हँस दी।

खिड़की के बाहर इमारतों को पीछे छोड़ते बस अब स्कूल के गेट के पास पहुँच चुकी थी।

बस रुकी।

दोनों साथ उतरीं।

कक्षा में पहुँचते ही सब अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गए।

कुछ ही देर में अध्यापिका अंदर आईं।

गुड मोर्निंग बच्चो !

गुड मोर्निंग , मैम !

आज पहली घंटी विज्ञान की थी।

अध्यापिका ने बोर्ड पर लिखा—

ब्रहमांड की शुरुआत !

मेघा की नज़र वहीं टिक गई।

बहुत समय पहले… अध्यापिका ने कहना शुरू किया,

जब कुछ भी नहीं था… तब एक विशाल विस्फोट हुआ बिग बैंग …

कक्षा शांत थी।

सभी बच्चे ध्यान से सुन रहे थे।

स्नेहा ने फिर से पेन उठाया और लिखना शुरू किया।

पर मेघा—

वह फिर सोचने लगी।

कुछ भी नहीं था…

फिर सब कुछ हो गया…

उसके भीतर सवाल उठने लगे—

अगर कुछ नहीं था…

तो यह 'सब कुछ' आया कहाँ से ?

उसने धीरे से स्नेहा की ओर देखा।

लिखो, स्नेहा ने बिना उसकी ओर देखे कहा,

इम्पोर्टेन्ट है।

मेघा ने पेन उठाया…

पर उसका ध्यान अब भी अपने सवाल पर था।

मेघा, अध्यापिका की आवाज़ आई।

वह चौंकी।

ध्यान कहाँ है ?

जी… यहीं, उसने धीरे से कहा।

तो फिर ध्यान से सुनो। ये सब परीक्षा में आएगा।

जी, मैम।

मेघा चुप हो गई।

पर उसके भीतर—

एक और ही सवाल चल रहा था।

क्या जो हमें सिखाया जा रहा है…

वही पूरा सच है ?

घंटी बजी।

कक्षा में फिर हलचल शुरू हो गई।

मेघा ने एक बार फिर खिड़की से बाहर देखा—

वही शहर…

वही अधूरा आसमान।

पर अब—

उसके भीतर सवाल थोड़ा और गहरा हो चुका था।

गणित — अनुशासन, डर और एक अनकहा खालीपन

विज्ञान की घंटी समाप्त हुई।

कक्षा में हल्की-सी हलचल बढ़ने लगी , पर इस बार वह ज़्यादा देर नहीं चली।

क्योंकि अगली घंटी … गणित की थी।

और गणित का मतलब था—

जय नारायण सर।

जैसे ही उनका नाम मन में आता, कक्षा अपने आप शांत हो जाती थी।

कुछ ही क्षणों में दरवाज़ा खुला।

और वे अंदर आए।

मध्यम कद, थोड़ा भारी शरीर, हल्का निकला हुआ पेट, और सिर पर बाल लगभग न के बराबर। उनकी चमकती हुई गंजी खोपड़ी ट्यूबलाइट की रोशनी में और भी साफ़ दिखाई देती थी। आँखों पर मोटा चश्मा, और चेहरे पर हमेशा की तरह एक सख्त, गंभीर भाव—जैसे मुस्कुराना उनके स्वभाव में ही न हो।

सर के कक्षा में प्रवेश करते ही

सभी बच्चे एकदम चुप हो गए।

गुड मॉर्निंग सर , सबने एक साथ कहा।

गुड मॉर्निंग , उन्होंने बिना किसी भाव के उत्तर दिया।

उनकी आवाज़ सीधी थी—न तेज़, न धीमी… पर इतनी ठोस कि किसी को दोबारा बोलने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी।

वे मेज़ के पास आए, रजिस्टर रखा, और पूरी कक्षा पर एक नज़र डाली।

बस एक नज़र ही काफ़ी थी।

स्नेहा ने तुरंत अपनी कॉपी सीधी कर ली।

मेघा भी सावधान होकर बैठ गई।

कक्षा के कुछ कोनों से हल्की-सी फुसफुसाहट आई—

आज तो गए…

टेस्ट है भाई…

शांत , सर की आवाज़ गूँजी।

पूरी कक्षा एकदम शांत हो गई।

आज का टेस्ट है, उन्होंने सीधा कहा,

ट्रीग्नोमेंटरी .

जैसे ही यह शब्द आया, कई चेहरों पर हल्की-सी बेचैनी दिखाई दी।

कॉपी निकालो, उन्होंने आदेश दिया।

सबने जल्दी-जल्दी अपनी कॉपियाँ निकालीं।

स्नेहा पूरी तरह तैयार थी।

उसके चेहरे पर वही एकाग्रता लौट आई थी।

मेघा ने भी अपनी कॉपी सामने रखी।

प्रश्नपत्र बाँटे जाने लगे।

जैसे ही पेपर उसके हाथ में आया, उसने एक नज़र में सारे सवाल देख लिए।

वही—

ट्राईएंगल , एंगल और इनकी आइडेंटिटी …

सब कुछ वैसा ही था जैसा उसने किया था।

उसने पेन उठाया और लिखना शुरू किया।

कक्षा में पेन की कागजो पर रगड़ खाने का शौर शुरू हो गया।

जय नारायण सर कक्षा में धीरे-धीरे घूम रहे थे।

उनकी चाल धीमी थी… पर निगाहें तेज़।

कोई इधर-उधर देखे, कोई रुके—

उनकी नज़र तुरंत पहुँच जाती थी।

मेघा लिख रही थी।

पहला सवाल—सही।

दूसरा—भी।

तीसरे सवाल पर आते ही उसने थोड़ा रुककर सोचा।

फिर हल कर दिया।

सब कुछ ठीक चल रहा था।

स्नेहा तेज़ी से आगे बढ़ रही थी—हर स्टेप साफ़, बिल्कुल वैसे जैसे सर चाहते थे।

कुछ ही देर में आधा समय बीत गया।

टाइम कम है, सर ने कहा।

कुछ बच्चों की गति तेज़ हो गई।

मेघा ने अपना पेपर देखा।

लगभग पूरा हो चुका था।

उसने आख़िरी सवाल भी हल कर दिया।

सब कुछ सही था।

जैसा सिखाया गया था… वैसा ही।

उसने पेन थोड़ी देर के लिए रोका।

कागज़ पर नज़र टिक गई।

उत्तर साफ़ थे।

सही थे।

पर उसको अपने भीतर एक हल्की-सी कमी महसूस हुई—

जैसे कुछ छूट गया हो,

जिसे वह पकड़ नहीं पा रही।

उसी क्षण उसके मन में एक विचार धीरे से उभरा—

क्या केवल सही तरीका सीख लेना ही समझना होता है… ?

उसने उस विचार को आगे नहीं बढ़ाया।

बस… उसे महसूस किया।

लास्ट टू मिनट्स , सर की आवाज़ आई।

सबने जल्दी-जल्दी अपने उत्तर पूरे किए।

घंटी बजी।

स्टॉप राइटिंग

सभी ने पेन रख दिए।

कॉपियाँ आगे बढ़ाई जाने लगीं।

स्नेहा ने धीरे से कहा—

इस बार तो पूरे आएँगे।

मेघा ने उसकी ओर देखा और हल्का-सा मुस्कुरा दी—

हाँ… शायद।

पर उसकी मुस्कान पूरी नहीं थी।

उसने खिड़की की ओर देखा।

बाहर वही शहर था—

चलता हुआ, भागता हुआ…

और भीतर—

कुछ थोड़ा धीमा हो गया था।

अवकाश — हँसी, हलचल और एक अलग-सी चुप्पी

घंटी बजते ही जैसे पूरी कक्षा में जान आ गई।

फाइनली ब्रेक !

भाई भूख लग रही है !

आज तो मैं पूरा टिफ़िन खत्म करूँगा !

ये आवाज़ें एक साथ गूँज उठीं।

स्नेहा ने अपनी कॉपी बंद की और स्ट्रेस लेते हुए बोली—

बस… अब दिमाग बंद।

पहले से ही बंद था, पीछे से एक लड़के ने कहा।

चुप रह ! स्नेहा ने हँसते हुए जवाब दिया।

मेघा हल्का-सा मुस्कुरा दी।

दोनों अपना टिफ़िन लेकर बाहर निकल गईं।

कॉरिडोर में पूरी अस्तव्यस्तता थी —

कोई भाग रहा था, कोई चिल्ला रहा था, कोई पहले से ही खाना शुरू कर चुका था।

मैदान में पहुँचते ही दोनों एक पेड़ के नीचे बैठ गईं।

पास में ही कुछ लड़कों का ग्रुप बैठा था।

एक ने जैसे ही चिप्स का पैकेट खोला—

खर्रर… आवाज़ हुई।

ओए धीरे खोल ! पूरा स्कूल सुन लेगा, दूसरे ने कहा।

तू खाएगा कि बस कमेंटरी ही करेगा ? पहला बोला।

सब हँस पड़े।

इधर भी दे ना थोड़ा, तीसरा बोला।

नहीं मिलेगा, अपने पैसे से खरीद, जवाब तुरंत आया।

स्नेहा ने धीरे से मेघा से कहा—

ये लोग हमेशा ऐसे ही रहते हैं।

इंट्रेस्टिंग हैं, मेघा ने हल्की मुस्कान के साथ कहा।

उसी समय एक लड़का हाथ उठाकर बोला—

देखो-देखो !

सबकी नज़र उसकी कलाई पर गई।

नई वाच है भाई, उसने गर्व से कहा।

अच्छा ? क्या करती है ? किसी ने पूछा।

कैलकुलेटर भी है इसमें, उसने बटन दबाते हुए कहा,

देख… $12 \times 12 = 144$।

ओहो ! किसी ने मज़ाक में कहा,

अब तू मैथ्स में टॉपर बनेगा !

नहीं, अब चीटिंग आसान हो जाएगी, पीछे से आवाज़ आई।

सब फिर हँस पड़े।

स्नेहा भी हँसी—

अगर सर ने देख लिया ना… तो वाच भी जाएगी और तुम भी।

सर को क्या पता चलेगा, लड़के ने कोनफीडेंस से कहा।

जय नारायण सर को सब पता चल जाता है, किसी ने धीरे से कहा।

एक सेकंड के लिए सब चुप…

फिर एक लड़की बोली—

कल मैंने हॉरर मूवी देखी…

कौन-सी ? तुरंत सवाल आया।

वो… जिसमें रात को दरवाज़ा अपने आप खुलता है…

अरे वो तो मैंने भी देखी ! एक और बोला।

सच में डर लगा ? किसी ने पूछा।

हाँ यार… मैं तो लाइट ऑन करके सोई, उसने कहा।

मैं तो अकेला देखता हूँ, एक लड़का बोला,

मुझे डर नहीं लगता।

हाँ, क्योंकि तुम सो जाते हो बीच में, दूसरे ने तुरंत कहा।

फिर हँसी।

मेघा, तू देखती है ? स्नेहा ने पूछा।

मेघा ने थोड़ा सोचा—

देखती हूँ… पर ज़्यादा डर नहीं लगता।

अच्छा ? बड़ी बहादुर हो, स्नेहा ने कहा।

नहीं… मेघा ने धीरे से कहा,

बस… कभी-कभी लगता है डर बाहर नहीं होता।

मतलब ? स्नेहा ने पूछा।

मेघा ने हल्की मुस्कान दी—

कुछ नहीं… ऐसे ही।

स्नेहा ने उसे देखा—

तुम फिर शुरू हो गई।

दोनों हँस पड़ीं।

कुछ देर तक बस खाने, हँसी और बातों का समय था।

चारों ओर ऊर्जा थी—

बिना किसी सोच के, बस उस पल को जीने की।

मेघा ने आसपास देखा—

हर कोई अपने-अपने तरीके से खुश था।

कोई चिप्स खा रहा था,

कोई मज़ाक कर रहा था,

कोई बस हँस रहा था।

वह भी उसी जगह बैठी थी…

उसी हँसी के बीच।

पर भीतर—

एक हल्की-सी दूरी फिर महसूस हुई।

जैसे वह इस सबका हिस्सा होते हुए भी…

थोड़ा अलग खड़ी हो।

उसने धीरे से आसमान की ओर देखा।

इमारतों के बीच बँटा हुआ।

एक पल के लिए उसके भीतर एक विचार आया—

क्या मैं भी इनके जैसी ही हूँ…

या कुछ अलग देख रही हूँ ?

वह कुछ क्षण चुप रही।

फिर स्नेहा ने उसे हल्का-सा धक्का दिया—

कहाँ खो गई ?

यहीं हूँ, मेघा ने मुस्कुराकर कहा।

घंटी बजी।

लंच ब्रेक समाप्त हो गया।

सब धीरे-धीरे वापस कक्षा की ओर बढ़ने लगे।

हँसी अभी भी थी…

पर थोड़ी कम।

मेघा भी उठी।

चलते-चलते उसने एक बार फिर पीछे मुड़कर देखा—

वही हलचल… वही जीवन।

और वह—

उसके बीच…

फिर भी थोड़ा अलग।

शाम — थकान, मोबाइल और वही रोज़ का शहर

स्कूल की आख़िरी घंटी बजते ही जैसे पूरे दिन का भार हल्का हो गया।

आज के लिए बस !, स्नेहा ने बैग उठाते हुए कहा।

हाँ… दिमाग़ ने भी छुट्टी मांग ली है, मेघा ने मुस्कुराकर जवाब दिया।

दोनों बस में बैठ गईं।

वापसी का सफ़र सुबह से थोड़ा अलग था—

अब बातों की जगह थकान ज़्यादा थी।

घर पहुँचते ही सो जाऊँगी, स्नेहा ने कहा।

तू सच में सोती है क्या ? मेघा ने छेड़ा।

नहीं… पहले मोबाइल, फिर पछतावा , फिर नींद, स्नेहा ने सीधा जवाब दिया।

दोनों हँस पड़ीं।

कुछ देर बाद मेघा का स्टॉप आ गया।

बाय , कल मिलते है , स्नेहा ने कहा।

बाय , मेघा ने उतरते हुए जवाब दिया।

घर का दरवाज़ा खोलते ही जैसे एक अलग ही दुनिया मिलती थी—

थोड़ी शांत… पर पूरी तरह नहीं।

आ गई ? मम्मी की आवाज़ रसोई से आई।

हाँ, मेघा ने जवाब दिया… और अगला काम बिना सोचे किया—

बैग सीधा सोफ़े पर फेंक दिया।

अरे ! मम्मी ने तुरंत आवाज़ लगाई,

बैग धीरे रखा करो !

अभी रखती हूँ… मेघा ने बिना उठाए जवाब दिया।

वह सीधे अपने कमरे में गई…

और जैसे ही बिस्तर दिखा—

धप्प से उस पर गिर गई।

ऊफ्फ… उसने लंबी साँस ली।

पूरा दिन जैसे उसी साँस में बाहर निकल गया।

कुछ सेकंड तक वह यूँ ही पड़ी रही—

आँखें बंद… बिल्कुल शांत।

फिर अचानक—

हाथ अपने आप मोबाइल ढूँढने लगे।

मेज़ पर रखा था—मम्मी का फोन।

उसने उठाया… अनलॉक किया…

और अगले ही पल—

रील्स चालू।

एक के बाद एक वीडियो—

कोई फनी , कोई बोरिंग , कोई बिल्कुल बेकार…

पर देखने में मज़ा आ रहा था।

वह हल्का-सा हँस भी दी।

तभी दरवाज़े से मम्मी की आवाज़ आई—

मेघा…

कोई जवाब नहीं।

मेघा ! इस बार थोड़ा ज़ोर से।

हूँ… उसने नज़र हटाए बिना जवाब दिया।

मम्मी कमरे में आईं।

उसे देखा—बिस्तर पर फैली हुई, मोबाइल हाथ में।

आते ही मोबाइल से चिपक गई, मम्मी ने कहा।

मेघा ने बिना ऊपर देखे कहा—

बस पाँच मिनट…

मम्मी ने हल्की मुस्कान के साथ कहा—

तुम्हारे ये पाँच मिनट… कभी खत्म नहीं होते।

मेघा अब हँस दी।

अच्छा, बस ये वाला लास्ट है…

ये लाइन भी लास्ट नहीं होती, मम्मी ने जवाब दिया।

दोनों हल्का-सा मुस्कुरा दीं।

मम्मी बाहर चली गईं।

मेघा फिर स्क्रीन में खो गई।

कुछ देर बाद उसने मोबाइल साइड में रखा।

छत की ओर देखा।

कमरा शांत था।

बाहर से हल्की-हल्की आवाज़ें आ रही थीं—गाड़ियों की, लोगों की।

शाम धीरे-धीरे उतर रही थी।

वह उठी और खिड़की के पास चली गई।

बाहर वही शहर था—

दिन भर भागने के बाद भी…

अब भी चल रहा था।

नीचे सड़क पर लोग लौट रहे थे।

कोई जल्दी में,

कोई थका हुआ,

कोई बस चुप।

उसी समय दरवाज़ा खुला।

पापा आ गए थे।

आ गई तुम ? उन्होंने बैग रखते हुए पूछा।

हाँ, मेघा ने कहा।

आज टेस्ट था न ? उन्होंने सीधे पूछा।

हाँ।

कैसा गया ?

अच्छा।

गुड, उन्होंने कहा,

ऐसे ही कॉनसीसटेंट रहो।

उन्होंने जूते उतारे, घड़ी देखी—

मुझे थोड़ी देर में एक कॉल अटेंड करनी है।

इतना कहकर वे अपने कमरे में चले गए।

मेघा उन्हें जाते हुए देखती रही।

उनके पास समय था…

पर हमेशा किसी काम के लिए।

कमरे में फिर शांति लौट आई।

मेघा ने फिर बाहर देखा।

आसमान अब बदल रहा था—

नीले से नारंगी…

फिर धीरे-धीरे धुंधला।

इमारतों के बीच से वही छोटा-सा टुकड़ा।

उसने कुछ क्षण उसे देखा।

और उसके भीतर एक हल्का-सा विचार उभरा—

क्या हर दिन ऐसा ही रहेगा… ? कुछ देर तक वहीं खड़ी रही।

फिर धीरे से पीछे हट गई।

शायद…

कुछ बदलने वाला था।

छुट्टियाँ — लौटने का एक पुराना रास्ता

अगले दिन स्कूल का माहौल कुछ अलग था।

कक्षा में आते ही बच्चों के चेहरों पर हल्की-सी चमक थी—

जैसे कोई खबर हवा में पहले ही फैल चुकी हो।

आज अनाउंसमेंट होगा, पीछे से किसी ने कहा।

पक्का ? दूसरे ने पूछा।

हाँ यार, सब बोल रहे हैं, जवाब आया।

स्नेहा ने मेघा की ओर झुककर कहा—

अगर आज छुट्टियाँ अनाउंस हो गईं ना…

तो ? मेघा ने मुस्कुराकर पूछा।

तो मैं पहले दो दिन कुछ नहीं करूँगी, स्नेहा ने कहा।

और तीसरे दिन ? मेघा ने छेड़ा।

तीसरे दिन से पछतावा शुरू, स्नेहा हँस पड़ी।

मेघा भी मुस्कुरा दी।

तभी क्लास टीचर अंदर आईं।

गुड मार्निंग , मैम

गुड मार्निंग , उन्होंने कहा।

कुछ सामान्य बातें हुईं…

फिर उन्होंने कहा—

एक इम्पोर्टेन्ट अनाउंसमेंट है।

पूरी कक्षा एकदम शांत हो गई।

अगले सप्ताह से आपकी गर्मी की छुट्टियाँ शुरू हो रही हैं।

बस—

इतना सुनना था कि कक्षा में हल्की-सी खुशी दौड़ गई।

येस !

फाइनली !

अब मज़ा आएगा !

शांत हो जाओ , मैम ने कहा,

अभी पूरी बात सुन लो।

सब तुरंत शांत हो गए।

छुट्टियाँ एक महीने की होंगी…

लेकिन हॉलिडे होमवर्क भी दिया जाएगा।

बस… पीछे से धीमी आवाज़ आई,

खुशी यहीं खत्म।

पास वाले हँस पड़े।

मैम ने एक नज़र डाली—

सब सीधे हो गए।

पीरियड खत्म होते ही कक्षा में शोर लौट आया।

तू कहाँ जाएगा ?

मैं तो नानी के घर !

मैं तो गेमिंग करूँगा पूरा दिन !

स्नेहा ने मेघा से पूछा—

तू क्या करेगी ?

मेघा ने थोड़ा सोचा—

शायद… गाँव जाऊँ।

फिर वही ? स्नेहा ने कहा,

तू हर साल जाती है न ?

हर साल नहीं… मेघा ने कहा,

पर हाँ… गई हूँ पहले।

कैसा होता है ? स्नेहा ने उत्सुकता से पूछा।

मेघा कुछ क्षण सोचती रही—

फिर कहा - शांत…

मतलब ? स्नेहा ने कहा।

मतलब… वहाँ आवाज़ें कम होती हैं, मेघा ने कहा,

और आसमान बड़ा।

ओहो… स्नेहा ने मुस्कुराकर कहा,

पोएटिक हो रही हो।

मेघा हल्का-सा हँस दी—

नहीं… सच में।

शाम को घर पर

मम्मी, छुट्टियाँ शुरू हो रही हैं अगले हफ्ते से, मेघा ने कहा।

अच्छा, मम्मी ने कहा,

तो इस बार फिर गाँव जाओगी ?

मेघा ने हल्का-सा सिर हिलाया—

हाँ… सोच रही हूँ।

मम्मी मुस्कुराईं—

तुम्हें वहाँ अच्छा लगता है न ?

हाँ… मेघा ने कहा,

थोड़ा अलग लगता है।

तभी पापा भी आ गए।

क्या प्लान बन रहा है ? उन्होंने पूछा।

गाँव जाने की सोच रहे हैं, मम्मी ने कहा।

पापा ने कहा—

अच्छा है। तुम्हारे मामाजी से भी मिलना हो जाएगा।

मेघा के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आई।

मामा जी—

उनका चेहरा याद आया।

शांत…

धीमे बोलने वाले…

और हमेशा कुछ अलग सोचने वाले।

मामा जी अब भी वैसे ही हैं ? मेघा ने पूछा।

मम्मी हँस दीं—

हाँ, और क्या बदलेंगे वो ?

अभी भी तुम्हें सवालों में उलझाएँगे, पापा ने मज़ाक में कहा।

मेघा मुस्कुरा दी।

उसे याद आया—

हर बार जब वह वहाँ जाती थी,

मामा जी उससे कुछ न कुछ पूछते थे…

या उसके सवालों का जवाब ऐसे देते थे कि और सवाल पैदा हो जाते थे।

कब जाना है ? उसने पूछा।

दो-तीन दिन में देखेंगे, मम्मी ने कहा।

मेघा चुप हो गई।

इस बार गाँव जाने का ख्याल अलग लग रहा था।

पहले वह बस घूमने जाती थी…

पर इस बार—

उसे लग रहा था जैसे वह कुछ ढूँढने जा रही है,

जिसका नाम अभी उसे खुद भी नहीं पता।

उसके मन में एक हल्का-सा विचार उभरा—

क्या इस बार वहाँ जाकर मुझे कुछ नया समझ आएगा… ?

वह कुछ देर तक उसी सोच में रही।

फिर हल्का-सा मुस्कुरा दी।

शायद—

इस बार की यात्रा…

सिर्फ छुट्टियाँ नहीं होने वाली थी।

तैयारी — बैग में कपड़े, मन में सवाल

अगले दो दिन घर का माहौल थोड़ा बदल गया था।

अब हर बातचीत के बीच एक ही चीज़ आ जाती थी—

गाँव जाना है।

अपना सारा सामान रखना, मम्मी अलमारी खोलते हुए बोलीं।

मम्मी, गाँव ही जा रही हूँ… किसी अभियान में नहीं, मेघा ने कहा।

हाँ, पर वहाँ जाकर फिर बोलोगी 'ये नहीं है, वो नहीं है', मम्मी ने जवाब दिया।

मेघा मुस्कुरा दी—

ठीक है, आप ही पैक कर दो।

नहीं, इस बार खुद करोगी, मम्मी ने साफ़ कहा।

मेघा ने एक गहरी साँस ली—

ठीक है… कोशिश करती हूँ।

उसने अपना बैग खोला और कपड़े निकालने लगी।

दो टी-शर्ट…

एक जीन्स…

फिर रुक गई।

मम्मी… उसने आवाज़ लगाई,

इतने कपड़े काफी हैं ?

मम्मी ने एक नज़र डाली—

तुम दो दिन के लिए नहीं जा रही हो।

तो कितने ? मेघा ने पूछा।

जितने पहन सको उतने, मम्मी ने हँसते हुए कहा।

मेघा भी हँस पड़ी—

ये भी कोई जवाब हुआ ?

कमरे के एक कोने में उसका बैग धीरे-धीरे भर रहा था।

पर साथ ही—

कुछ यादें भी खुल रही थीं।

उसे याद आया—

पिछली बार जब वह गाँव गई थी,

तो शाम को खुले आँगन में बैठी थी…

और ऊपर—

पूरा आसमान।

बिना किसी रुकावट के।

उसने एक पल के लिए खिड़की से बाहर देखा—

यहाँ आसमान फिर वही था—

इमारतों के बीच बँटा हुआ।

वह वापस बैग की ओर लौट आई।

तभी पापा अंदर आए।

पैकिंग शुरू हो गई ? उन्होंने पूछा।

हाँ… कोशिश कर रही हूँ, मेघा ने कहा।

पापा ने बैग की ओर देखा—

इतना कम सामान ?

मम्मी कह रही हैं ज़्यादा रखो, मेघा ने कहा।

मम्मी हमेशा ज़्यादा ही कहती हैं, पापा ने मुस्कुराकर कहा।

सुन लिया मैंने, बाहर से मम्मी की आवाज़ आई।

तीनों हँस पड़े।

पापा ने थोड़ा गंभीर होते हुए कहा—

वहाँ जाकर मोबाइल कम इस्तेमाल करना।

पापा… मेघा ने हल्का सा चेहरा बनाया,

नेटवर्क ही नहीं आता वहाँ।

अच्छा है, पापा ने कहा,

थोड़ा ब्रेक मिलेगा।

मेघा ने कुछ नहीं कहा…

पर मन ही मन सोचा—

शायद सच में।

शाम को स्नेहा का फोन आया।

तैयारी हो गई ? उसने पूछा।

चल रही है, मेघा ने कहा।

मज़ा आएगा यार, स्नेहा बोली,

मैं तो यहीं फँसी रहूँगी होमवर्क के साथ।

तू भी आ जा, मेघा ने मज़ाक में कहा।

हाँ, आंटी से पूछ ले पहले, स्नेहा हँसी।

और तू ट्रीगोनोमेट्री की प्रक्टिस ही करते रहना, मेघा ने छेड़ा।

मत याद दिला, स्नेहा ने तुरंत कहा।

दोनों हँस पड़ीं।

फोटो भेजना वहाँ की, स्नेहा ने कहा।

देखते हैं, मेघा ने जवाब दिया।

रात को बैग लगभग तैयार हो चुका था।

कपड़े, कुछ किताबें…

और एक छोटी-सी नोटबुक भी उसने रख दी।

इस बार बिना कुछ लिखे… बस साथ ले जाने के लिए

वह बिस्तर पर बैठ गई।

कमरा वही था…

पर मन थोड़ा अलग।

कल या परसों—

वह इस जगह से दूर होगी।

शहर की आवाज़ों से…

इस रोज़मर्रा की जिन्दगी से…

कुछ देर के लिए।

उसने धीरे से सोचा—

क्या इस बार वहाँ जाकर मुझे वही महसूस होगा…

या कुछ नया मिलेगा ?

वह कुछ क्षण चुप रही।

फिर हल्का-सा मुस्कुरा दी।

बैग बंद किया।

और लाइट ऑफ कर दी।

प्रस्थान — साथ चलती हुई दो यात्राएँ

सुबह आज कुछ अलग थी।

अलार्म वही था…

पर उठने का कारण अलग।

मेघा, उठो ! देर हो जाएगी, मम्मी की आवाज़ आई।

हाँ मम्मी… मेघा ने आँखें खोलते हुए कहा—

इस बार उसे खुद भी जल्दी उठना था।

कमरे में हल्की-सी ठंडक थी,

पर घर में तैयारी की गर्माहट।

बैग पहले से तैयार था।

मम्मी आख़िरी बार चेक कर रही थीं—

कपड़े रख लिए ?

हाँ।

दवाइयाँ ?

मम्मी… मेघा हल्का-सा हँसी,

इतनी ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

फिर भी, मम्मी ने कहा।

कुछ ही देर में—

तीनों स्टेशन की ओर निकल पड़े।

सड़क पर सुबह की हलचल शुरू हो चुकी थी।

पर जैसे ही वे स्टेशन पहुँचे—

दुनिया अचानक तेज़ हो गई।

रेलवे स्टेशन…

भीड़, आवाज़ें, और लगातार चलती हुई ज़िंदगी।

चाय-चाय !

पानी !

समोसा गरम !

कुली लाल कपड़े में भारी सामान लेकर दौड़ रहे थे।

लोग जल्दी में थे…

कोई ट्रेन पकड़ने के लिए,

कोई किसी को छोड़ने के लिए।

मेघा कुछ क्षणों के लिए रुककर यह सब देखने लगी।

हर चेहरा कहीं जा रहा था…

या किसी को विदा कर रहा था।

चलो, उधर, पापा ने कहा।

वे प्लेटफॉर्म तक पहुँचे।

ट्रेन पहले से खड़ी थी—

लंबी… और तैयार।

यही है, पापा ने टिकट देखते हुए कहा।

वे अपने कोच में चढ़ गए।

अंदर पहले से लोग बैठे थे—

कोई सीट ढूँढ रहा था,

कोई बैग जमा रहा था,

कोई खिड़की से बाहर झाँक रहा था।

मेघा खिड़की के पास बैठ गई।

मम्मी उसके सामने वाली सीट पर बैठ गईं।

बैग ठीक से रख दो, मम्मी ने कहा।

रख दिया, मेघा ने कहा।

पापा ने चारों ओर देखा—

ठीक है सब ?

हाँ, मम्मी ने कहा।

कुछ क्षणों के लिए तीनों साथ बैठे रहे।

भीड़ की आवाज़ अंदर तक आ रही थी।

फिर—

ट्रेन ने हल्की-सी सीटी दी।

चलो, मैं उतरता हूँ, पापा ने कहा।

मम्मी ने सिर हिलाया।

मेघा ने पापा की ओर देखा।

उन्होंने उसके सिर पर हाथ रखा—

ध्यान रखना… और एन्जॉय करना।

जी, मेघा ने कहा।

और मम्मी की बात सुनना, पापा ने हल्का-सा मुस्कुराते हुए कहा।

पापा… मेघा हँस दी।

पापा नीचे उतर गए।

ट्रेन धीरे-धीरे चलने लगी।

मेघा और मम्मी दोनों खिड़की से बाहर देखने लगीं।

पापा प्लेटफॉर्म पर खड़े थे—

हाथ हिलाते हुए।

मेघा ने भी हाथ हिलाया।

धीरे-धीरे…

प्लेटफॉर्म पीछे छूट गया।

पापा छोटे होते गए…

और फिर भीड़ में खो गए।

ट्रेन अब अपनी गति पकड़ चुकी थी।

ठीक हो ? मम्मी ने पूछा।

हाँ, मेघा ने कहा।

पहले भी गई हो… फिर भी हर बार अलग लगता है न ? मम्मी ने कहा।

मेघा ने हल्के से सिर हिलाया—

हाँ… थोड़ा।

मम्मी ने खिड़की के बाहर देखा—

शहर पीछे छूटता है… तो मन भी थोड़ा हल्का हो जाता है।

मेघा ने मौन सर हिलाया।

यात्रा — मिटती दीवारें, खुलता आकाश

ट्रेन अब शहर से दूर निकल चुकी थी।

मेघा ट्रेन की खिड़की से बाहर देख रही थी—

पहले इमारतें थीं…

फिर धीरे-धीरे खाली जगहें आने लगीं।

सड़कें कम हो गईं।

आसमान थोड़ा बड़ा लगने लगा।

ट्रेन की आवाज़—

छुक छुक …

एक लय में चल रही थी।

मेघा ने सिर खिड़की से टिकाया।

हवा अब अलग थी—

हल्की… खुली।

शुरुआत में खिड़की के बाहर अब भी वही दृश्य थे—

ऊँची-ऊँची इमारतें,

कंक्रीट की दीवारें,

कारखानों की लंबी चिमनियाँ,

और बड़े-बड़े गोदाम…

सब कुछ जैसे पीछे की ओर भाग रहा था।

कभी किसी कंपनी का बड़ा-सा बोर्ड दिखता—

फिर अगले ही पल गायब।

धीरे-धीरे—

इमारतें कम होने लगीं।

दीवारें छोटी होती गईं।

और फिर…

एक ऐसा पल आया जब सब कुछ खुल गया।

अब बाहर—

बस ज़मीन थी।

दूर तक फैली हुई…

बिना किसी रुकावट के।

जून की गर्मी अपने पूरे रूप में थी।

खेत खाली थे—

कोई फसल नहीं,

बस सूखी मिट्टी…

जिसमें कहीं-कहीं दरारें पड़ी थीं।

पर उस खालीपन में भी एक अजीब-सी शांति थी—

जैसे ज़मीन खुद भी कुछ देर के लिए ठहर गई हो।

कहीं एक अकेला पेड़ खड़ा था—

धूप में स्थिर।

कहीं कुछ पेड़ों का छोटा-सा समूह—

जैसे साथ में खड़े होकर धूप बाँट रहे हों।

हवा अब अलग थी—

गर्म… पर खुली।

मेघा खिड़की से बाहर देख रही थी—

इस बार वह सिर्फ देख नहीं रही थी...

वह उस बदलाव को महसूस कर रही थी।

ट्रेन के भीतर—

एक अलग ही दुनिया चल रही थी।

चाय-चाय... गरम चाय !

पानी, कोल्ड ड्रिंक !

एक आदमी आगे बढ़ा—

मैडम, चिप्स ?

मेघा ने तुरंत चिप्स की ओर हाथ बढ़ाया—

भैया, एक दे दीजिए—

नहीं भैया, अभी नहीं, मम्मी ने सहज स्वर में कहा।

मेघा का हाथ एक पल को हवा में ठहर गया...

फिर उसने खुद ही हल्की-सी मुस्कान के साथ हाथ वापस खींच लिया।

मम्मी ने उसकी ओर देखा—

दोनों की नज़रें मिलीं... और बिना कुछ कहे हल्का-सा हँस दीं।

चिप्स वाला भैया भी मुस्कुराता हुआ आगे बढ़ गया।

कुछ सीट आगे एक छोटा बच्चा रो रहा था—

मम्मी, मुझे भी चाहिए...

पहले खाना खाओ, उसकी मम्मी ने कहा।

पास में कोई फोन पर जोर-जोर से बात कर रहा था।

कहीं दो लोग सीट को लेकर बहस कर रहे थे।

तभी—

एक बूढ़ा आदमी धीरे-धीरे आगे बढ़ा।

बेटा… कुछ दे दो…

उसकी आवाज़ धीमी थी, थकी हुई।

मम्मी ने बैग से कुछ पैसे निकाले और उसे दे दिए।

वह सिर झुकाकर आगे बढ़ गया।

मेघा उसे देखती रही—

ट्रेन में हर तरह की ज़िंदगी थी—

हँसी भी…

थकान भी…

और कुछ अनकही कहानियाँ भी।

तभी सामने वाली सीट पर एक व्यक्ति आकर बैठा।

सादा वस्त्र…

हल्की दाढ़ी…

आँखों में गहराई।

एक साधु।

न कोई जल्दी…

न कोई हलचल।

बस… शांत।

मेघा की नज़र अनायास ही उनकी ओर चली गई।

वे बाहर देख रहे थे—

जैसे उन्हें कुछ ढूँढ़ना नहीं था…

बस देखना था।

कुछ क्षणों बाद उन्होंने पूछा—

कहाँ जा रही हो ?

गाँव… मामा जी के पास, मेघा ने कहा।

उन्होंने हल्की-सी मुस्कान दी—

अच्छा है… कभी-कभी लौटना ज़रूरी होता है।

लौटना ? मेघा ने पूछा।

उन्होंने बाहर की ओर देखा—

जहाँ शोर कम हो…

वहीं से सुनना शुरू होता है।

मेघा कुछ क्षण चुप रही।

पूरी तरह समझ नहीं पाई…

पर उसे लगा—

इसमें कुछ ऐसा है, जो वह बाद में समझेगी।

आप कहाँ जा रहे हैं ? उसने पूछा।

साधु मुस्कुराए—

मैं… कहीं नहीं जा रहा।

बस… चल रहा हूँ।

मेघा हल्का-सा उलझी…

फिर मुस्कुरा दी।

साधु भी मुस्कुरा दिए।

और फिर—दोनों चुप।

बाहर—

अब कोई दीवार नहीं थी।

कोई इमारत नहीं।

बस—

आसमान।

पूरा... खुला...

अनंत।

मेघा ने ऊपर देखा।

पहली बार—

उसे लगा कि आसमान सच में बड़ा होता है।

शहर में वह बस एक टुकड़ा था...

यहाँ—

पूरा।

उसने धीरे से सिर खिड़की से टिकाया।

हवा उसके चेहरे से टकरा रही थी—

गर्म... पर सच्ची।

उसके भीतर एक हल्का-सा विचार उभरा—

क्या खुलापन बाहर होता है...

या पहले अंदर बनता है ?

वह उस विचार के साथ चुप रही।

ट्रेन आगे बढ़ती रही।

पीछे शहर छूट चुका था।

और आगे—

एक नई दुनिया...

धीरे-धीरे सामने आ रही थी।

उसने धीरे से सोचा—

क्या सच में जगह बदलने से सब कुछ बदल जाता है... ?

मम्मी ने उसकी ओर देखा—

क्या सोच रही हो ?

कुछ नहीं… मेघा ने हल्की मुस्कान के साथ कहा।

मम्मी भी मुस्कुरा दीं—

तुम्हारा 'कुछ नहीं'… हमेशा कुछ होता है।

दोनों हल्का-सा हँस पड़ीं।

ट्रेन आगे बढ़ती रही।

और उसके साथ—

एक नई शुरुआत भी।

आगमन — एक छोटा स्टेशन, एक बड़ा स्वागत

ट्रेन धीरे-धीरे रुकने लगी। लगता है आ गया, मम्मी ने खिड़की से बाहर देखते हुए कहा। मेघा ने बाहर झाँका। न कोई बड़ा प्लेटफॉर्म, न भीड़—बस एक छोटा-सा स्टेशन, एक पुराना बोर्ड जिस पर गाँव का नाम हल्का-सा फीका पड़ा हुआ था, और कुछ लोग जो बिना किसी जल्दबाज़ी के खड़े थे। ट्रेन जैसे ही रुकी, एक हल्की-सी शांति चारों ओर फैल गई। शहर के स्टेशन जैसा शोर यहाँ नहीं था—यहाँ सब कुछ धीमा था, सधा हुआ, जैसे समय खुद थोड़ा आराम कर रहा हो।

चलो, मम्मी ने कहा। मेघा ने बैग उठाया और नीचे उतर गई। प्लेटफॉर्म पर कदम रखते ही उसे सबसे पहले जो महसूस हुआ, वह थी खुली हवा—गर्म जरूर, पर भारी नहीं।

अरे… ! एक परिचित आवाज़ आई। मेघा ने मुड़कर देखा और उसके चेहरे पर तुरंत मुस्कान फैल गई। थोड़ी दूरी पर मामा खड़े थे—सादा कुर्ता-पायजामा, चेहरे पर हल्की दाढ़ी और आँखों में वही पुरानी शांति। उन्होंने हाथ फैलाते हुए हँसकर कहा, आ गई मेघनाथ ! मेघा भी हँसते हुए उनकी ओर बढ़ी—मामा ! और अगले ही पल उन्होंने उसे अपने पास खींचकर गले लगा लिया। इस बार तो सच में बड़ी हो गई,

मामा ने कहा। हर बार यही बोलते हो, मेघा ने मुस्कुराकर जवाब दिया। क्योंकि हर बार सच होता है, मामा हँसे।

फिर उन्होंने मम्मी की ओर मुड़कर कहा—आ गई बहन जी ! मम्मी भी मुस्कुरा दीं—हाँ, आ गए। सफ़र ठीक रहा ? मामा ने पूछा। हाँ, बिल्कुल ठीक, मम्मी ने जवाब दिया। कुछ पल तीनों वहीं खड़े रहे—बिना किसी जल्दबाज़ी के।

चलो, गाड़ी उधर खड़ी है, मामा ने कहा।

मेघा ने सोचा—कोई कार होगी। लेकिन जैसे ही वह स्टेशन के बाहर पहुँची, वह हल्का-सा रुक गई। सामने एक ट्रैक्टर खड़ा था। मामा ने उसकी तरफ देखा और मुस्कुराए—क्या हुआ, पहचान में नहीं आया ? मेघा हँस पड़ी—आया… बस भूल गई थी। मम्मी ने भी मुस्कुराकर कहा—पिछली बार भी इसी में गए थे। गाँव की असली सवारी यही है, मामा ने कहा।

बैग साइड में रखा गया। मामा ड्राइविंग सीट पर बैठ गए और मेघा व मम्मी साइड सीट बैठ गईं। ट्रैक्टर धीरे-धीरे चलने लगा।स्टेशन पीछे छूट गया।

अब सामने मिट्टी का रास्ता था। दोनों तरफ खाली खेत फैले हुए थे। कहीं-कहीं पेड़ खड़े थे, और दूर-दूर छोटे घर दिखाई दे रहे थे। हवा खुली थी और रास्ता बिना किसी रुकावट के आगे बढ़ रहा था।

कैसा लग रहा है, मेघनाथ ? मामा ने पूछा।

अलग… मेघा ने चारों ओर देखते हुए कहा।

अच्छा अलग या अजीब अलग ? मामा ने हँसते हुए पूछा।

अभी तो अच्छा, मेघा ने कहा।

बस, यही सही है, मामा मुस्कुराए।

रास्ते में कुछ बच्चे खेलते हुए दिखे—राम-राम भैया ! उन्होंने आवाज़ लगाई। राम-राम ! मामा ने जवाब दिया। मेघा यह सब देखती रही—यहाँ हर कोई किसी न किसी को पहचानता था।

ट्रैक्टर हिलता-डुलता आगे बढ़ रहा था। हवा उसके बालों को पीछे उड़ा रही थी। सूरज धीरे-धीरे ढलने लगा था, और रास्ता सुनहरी रोशनी में बदलता जा रहा था।

मेघा चुपचाप बैठी रही—

बस देखती हुई।

और ट्रैक्टर उसे धीरे-धीरे गाँव की ओर ले जा रहा था।

रास्ता — मिट्टी की महक और गाँव की चाल

ट्रैक्टर कच्चे रास्ते पर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था।

हर झटके के साथ मेघा हल्की-सी ऊपर उछलती,

और फिर खुद ही मुस्कुरा देती।

मामा, ये रास्ता तो रोलर कॉस्टर से कम नहीं है, उसने कहा।

मामा हँसे—

गाँव में फ्री का अम्युस्मेंट पार्क मिलता है।

मम्मी भी मुस्कुरा दीं—

दो दिन में आदत हो जाएगी।

रास्ता अब पूरी तरह मिट्टी का था।

दोनों तरफ दूर तक खाली खेत फैले हुए थे—

जून की धूप में शांत, स्थिर।

थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बड़े-बड़े पेड़ खड़े थे—

पीपल के पेड़…

नीम के पेड़…

उनकी घनी छाया नीचे एक ठंडी-सी जगह बना रही थी।

एक जगह—

कुछ भैंसें पेड़ की छाँव में बैठी थीं,

आँखें आधी बंद…

जैसे धूप से बचकर आराम कर रही हों।

मेघा उन्हें ध्यान से देखती रही।

आगे—

एक बड़े पीपल के पेड़ के नीचे कुछ बुज़ुर्ग बैठे थे।

दो-तीन लोग हुक्का पी रहे थे—

धीरे-धीरे, आराम से।

पास ही कुछ लोग जमीन पर बैठे ताश खेल रहे थे।

कोई जल्दी नहीं थी…

बस समय अपने हिसाब से चल रहा था।

मामा ने ट्रैक्टर थोड़ा धीमा किया और आवाज़ लगाई—

ताऊ, राम-राम!

बुज़ुर्गों ने सिर उठाया—

राम-राम!

उनकी आवाज़ में अपनापन था…

और एक पुरानी पहचान भी।

ट्रैक्टर फिर आगे बढ़ गया।

रास्ते में कुछ बच्चे खेलते हुए दिखाई दिए—

धूल में, बिना चप्पल के,

पूरी मस्ती में।

वे बस एक पल के लिए ट्रैक्टर की तरफ देखते…

फिर अपने खेल में वापस लग जाते।

हवा लगातार चल रही थी—

गर्म जरूर थी,

पर खुली।

शहर जैसी बंद नहीं।

मेघा चुपचाप बैठी थी—

बस देखती हुई…

हर चीज़ को…

ध्यान से।

घर — आँगन की गर्माहट और अपनेपन की छाँव

ट्रैक्टर धीरे-धीरे एक बड़े से दरवाज़े के सामने आकर रुका।

लकड़ी का ऊँचा, चौड़ा दरवाज़ा— एक विशालकाय वृक्ष की भांति।

आ गए, मामा ने कहा और ट्रैक्टर को अंदर ले गए।

मेघा ने चारों ओर देखा—

घर पक्का था,

मिट्टी का नहीं।

अंदर एक बड़ा-सा आँगन था—

साफ-सुथरा, खुला।

आँगन के एक कोने में एक ऊँचा-सा चबूतरा बना था,

जिस पर तुलसी का पौधा लगा था—

हरी पत्तियों से भरा, जैसे घर की साँसे वहीं बसती हो।

दरवाज़े के पास ही एक पेड़ था—

घना और छायादार।

उसी के नीचे—

भैंसें बंधी थीं,

एक गाय,

और एक प्यारा सा बछड़ा …

वो कभी पूँछ हिलाता ,

कभी गर्दन झटकता ,

और बीच-बीच में धीमी आवाज़ करता।

ट्रैक्टर रुकते ही जैसे घर में हलचल दौड़ गई।

आ गए ! आ गए ! किसी ने अंदर से कहा।

नानी सबसे पहले बाहर आईं—

चेहरे पर खुशी साफ झलक रही थी।

अरे मेघा ! उन्होंने आगे बढ़कर कहा।

मेघा ने झुककर उनके पैर छुए।

खुश रहो, नानी ने उसके सिर पर हाथ रखते हुए कहा।

नाना भी आँगन में आ गए—

धीरे-धीरे चलते हुए, पर चेहरे पर वही अपनापन।

आ गई बिटिया, उन्होंने मुस्कुराकर कहा।

मेघा ने उनके भी पैर छुए।

पास ही बैठक में कुछ और बुज़ुर्ग बैठे थे—

नाना के दोस्त।

उन्होंने भी मुस्कुराकर उसे देखा—

आओ बिटिया, आओ।

मम्मी ने भी सबको नमस्ते किया।

मामी भी अंदर से जल्दी-जल्दी बाहर आईं—

आ गए आप लोग ! उन्होंने खुशी से कहा।

हाँ, पहुँच गए, मम्मी ने जवाब दिया।

कुछ ही पलों में पूरा आँगन जैसे भर गया—

बातों से,

हँसी से,

और मिलने की खुशी से।

अरे, ये इतना भारी बैग क्यों है ? नानी ने मेघा का बैग उठाते हुए कहा।

क्या अब भी पढ़ाई करनी है ?

मेघा हल्का-सा हँस दी—

नानी, हॉलिडे होमवर्क मिला है…

नानी ने तुरंत मुँह बनाया—

अरे, ये भी कोई बात हुई !

अगर होमवर्क ही कराना है तो बच्चों को छुट्टी क्यों देते हैं ?

मामा हँस पड़े—

सही कह रही हो माँ।

आँगन में हल्की-सी हँसी फैल गई।

तुम लोग बैठो, मैं चाय बनाती हूँ, मामी ने कहा और अंदर चली गईं।

मेघा चारों ओर देख रही थी—

हर चीज़ में एक अपनापन था।

कुछ ही देर में मामी ट्रे में चाय लेकर आ गईं।

लो, गरम-गरम चाय, उन्होंने कहा।

मेघा ने कप की ओर देखा—

और फिर मुस्कुराकर बोली—

इतनी गर्मी में भी चाय ?

नानी हँस दीं—

अरे, इसके लिए नींबू पानी बना दो।

फिर खुद ही बोलीं—

हम तो चाय ही पिएँगे, इससे ही तो ताकत आती है।

सब फिर हँस पड़े।

मामी ने कहा—

अच्छा, मेघा के लिए नींबू पानी बना देती हूँ।

वह फिर अंदर चली गईं।

कुछ ही देर में ठंडा नींबू पानी लेकर लौटीं।

मेघा ने गिलास हाथ में लिया—

ठंडक जैसे सीधे मन तक उतर गई।

आँगन में सब बैठे थे—

कोई चाय पी रहा था,

कोई बातें कर रहा था,

कोई बस मुस्कुरा रहा था।

घर में एक अलग-सी रौनक थी—

न ज़्यादा शोर,

न कोई जल्दबाज़ी…

बस अपने लोग।

और मेघा—

चुपचाप बैठी थी,

इस नए-पुराने माहौल को

धीरे-धीरे अपने भीतर उतरते हुए महसूस करती हुई।

शाम — गाँव की गलियाँ और कुछ पुरानी कहानियाँ

दोपहर धीरे-धीरे ढल चुकी थी और आँगन में धूप का रंग हल्का होकर सुनहरा होने लगा था। पेड़ की छाया लंबी फैल गई थी और घर के भीतर की हलचल अब शांत हो चुकी थी। थोड़ी देर आराम करने के बाद मेघा बाहर आई और उत्साह से बोली, मामा, मैं गाँव देखने जाऊँ ? मामा मुस्कुराए और बोले, चलो, मैं ही घुमा देता हूँ। दोनों धीरे-धीरे घर से बाहर निकल गए। गाँव की गलियाँ संकरी थीं—मिट्टी का रास्ता, दोनों तरफ छोटे-बड़े घर और बीच-बीच में खड़े पेड़। हवा में दिन की गर्मी अब कम हो रही थी और एक हल्की ठंडक घुलने लगी थी। चलते-चलते मामा ने एक पुराने से स्कूल की ओर इशारा करते हुए कहा, यहाँ मैं पढ़ता था। मेघा ने ध्यान से देखा—छोटा-सा भवन, थोड़ा पुराना, लेकिन अब भी खड़ा हुआ। सच में ? उसने पूछा। मामा हँसते हुए बोले, हाँ, और तुम्हारी मम्मी… वे थोड़ा रुके, फिर मुस्कुराकर बोले, एक बार टीचर से लड़कर अपना बस्ता उठाया और सीधे घर चली गई थी। मेघा ज़ोर से हँस पड़ी—सच में ? मामा ने सिर हिलाया, हाँ, तब से ही थोड़ी जिद्दी थी। आगे बढ़ते हुए एक पुरानी इमारत दिखाई दी। ये क्या है ? मेघा ने पूछा। पुराना पोस्ट ऑफिस, मामा ने कहा, अब बंद पड़ा है। दरवाज़ा आधा टूटा हुआ था और दीवारों का रंग उतर चुका था। थोड़ी दूर आगे एक बड़ी, पुरानी हवेली दिखाई दी—ऊँची दीवारें, बंद खिड़कियाँ और चारों तरफ एक अजीब-सी खामोशी। ये… ? मेघा ने पूछा। मामा ने हल्के स्वर में कहा, इसे लोग भूतिया हवेली कहते हैं। मेघा ने तुरंत जवाब दिया, मैं भूत-वूत को नहीं मानती। मामा मुस्कुराए, कोई बात नहीं… कभी मिलवा देंगे। मेघा ने उनकी ओर देखा—सच में ? मामा हँस पड़े—देखते हैं। दोनों आगे बढ़ते रहे। गाँव धीरे-धीरे शाम में बदल रहा था—कहीं चूल्हे जलने की हल्की-सी खुशबू आने लगी थी, कहीं लोग अपने घरों की ओर लौट रहे थे। आसमान का रंग नीले से सुनहरा और फिर हल्का नारंगी होने लगा था। चलो, अब घर चलते हैं,

मामा ने कहा। मेघा ने एक बार पीछे मुड़कर गाँव को देखा—दिन भर की हलचल अब धीरे-धीरे शांत हो रही थी। दोनों वापस घर की ओर चल पड़े, और इस तरह मेघा ने गाँव को पहली बार धीरे-धीरे, पास से देखना शुरू किया।

रात — जुगनू, सितारे और कुछ सवाल

शाम धीरे-धीरे रात में बदल चुकी थी।

आसमान का हल्का नारंगी रंग अब गहरे नीले में घुल गया था।

गाँव की गलियों में हल्की-हल्की आवाज़ें थीं—कहीं बर्तन रखे जाने की, कहीं धीमी बातचीत की।

घर के आँगन में भी सब अपने-अपने काम में लगे थे।

तभी—

अचानक बिजली चली गई।

लो, फिर चली गई, मम्मी ने कहा।

नानी हँस दीं—

यहाँ तो ऐसा ही होता है, आदत डाल लो।

कुछ ही क्षणों में घर अँधेरे में डूब गया—

पर वह अँधेरा डरावना नहीं था।

धीरे-धीरे आँखें उस अँधेरे को अपनाने लगीं।

और तभी—

मेघा ने देखा—

छोटे-छोटे उजाले हवा में तैर रहे थे।

ये क्या है ? उसने आश्चर्य से पूछा।

मामा मुस्कुराए—

जुगनू।

आँगन के कोने-कोने में, पेड़ों के पास, हवा में—

छोटे-छोटे जुगनू चमक रहे थे।

जैसे किसी ने अँधेरे में छोटे-छोटे दीप जला दिए हों।

मेघा कुछ पल के लिए बस उन्हें देखती रह गई—

बिना कुछ बोले।

चलो, ऊपर चलते हैं, मामा ने कहा।

घर की छत पर चारपाई पहले से रखी थी।

मम्मी, नानी, मामा—सब धीरे-धीरे ऊपर छत पर आ गए।

अध्याय 2
विज्ञान का अद्भुत संसार : जब ‘कैसे’ के उत्तर मिलते हैं… पर ‘क्यों’ अभी भी बाकी रहता है।

रात — सवालों की शुरुआत

हवा अब और ठंडी लग रही थी।

दूर-दूर तक कोई शोर नहीं था।

मेघा चारपाई पर लेट गई।

और जैसे ही उसने ऊपर देखा—

वह एकदम रुक गई।

आसमान…

पूरा भरा हुआ था।

अनगिनत तारे—

छोटे, बड़े, चमकते हुए।

शहर में उसने कभी ऐसा आसमान नहीं देखा था।

वहाँ तो बस कुछ तारे दिखते थे…

यहाँ—

जैसे पूरा आकाश जीवित था।

मामा… उसने धीरे से कहा।

हूँ ? मामा ने जवाब दिया।

इन तारों में क्या होता है ?

मामा ने आसमान की तरफ देखा, फिर मुस्कुराए—

अच्छा सवाल है।

वे थोड़ी देर चुप रहे, फिर बोले—

ये तारे… असल में सूरज जैसे होते हैं।

मतलब ? मेघा ने पूछा।

मतलब… जैसे हमारा सूरज है ना, वैसे ही ये भी बहुत बड़े-बड़े आग के गोले होते हैं—बस हमसे बहुत दूर।

मेघा ध्यान से सुन रही थी।

तो ये इतने छोटे क्यों दिखते हैं ? उसने पूछा।

मामा हँसे—

क्योंकि बहुत दूर हैं। जितनी दूर चीज़ होती है, उतनी छोटी दिखती है।

कितनी दूर ? मेघा ने पूछा।

मामा ने हल्के से कहा—

इतनी दूर… कि अगर तुम आज वहाँ जाने निकलो, तो पूरी ज़िंदगी लग जाए।

मेघा चुप हो गई।

फिर बोली—

और चाँद ?

मामा ने चाँद की ओर इशारा किया—

वो थोड़ा पास है… इसलिए बड़ा दिखता है। वो भी एक पत्थर जैसा है—बस रोशनी सूरज से लेता है।

मतलब उसमें खुद की रोशनी नहीं होती ? मेघा ने पूछा।

नहीं, मामा ने कहा,

वो सूरज की रोशनी को वापस हमें दिखाता है।

कुछ देर के लिए सब चुप हो गए।

हवा धीरे-धीरे चल रही थी।

दूर कहीं से कुत्ते के भौंकने की आवाज़ आई…

फिर सब शांत।

मेघा फिर आसमान की ओर देखने लगी।

इस दृश्य में मेघा एकदम विलुप्त सी हो गयी।

अब उसे तारे सिर्फ सुंदर नहीं लग रहे थे—

वह उन्हें समझने की कोशिश कर रही थी।

मामा ने उसकी ओर देखा और हल्के से मुस्कुराए—

सवाल अच्छे हैं तुम्हारे।

मेघा ने भी मुस्कुराकर कहा—

और भी हैं…

मामा हँसे—

अच्छा है… धीरे-धीरे पूछना।

आसमान वैसा ही था—

अनंत, शांत, चमकता हुआ।

और उस रात—

चारपाई पर लेटी हुई मेघा के मन में

पहली बार कुछ सवाल सच में जाग गए थे।

रात अब पूरी तरह उतर चुकी थी।

आसमान और गहरा हो चूका था—और उस पर बिखरे हुए अनगिनत तारे और सुन्दर लग रहे थे।

मम्मी और नानी धीरे-धीरे बातें करते-करते शांत हो गई थीं।

मेघा अब भी जाग रही थी।

उसकी आँखें आसमान पर टिकी थीं—जैसे वह कुछ खोज रही हो।

मामा… उसने धीरे से पुकारा।

हूँ… मामा ने जवाब दिया।

मैंने सुना है… इन तारों में एलियन होते हैं क्या ?

मामा ने उसकी ओर देखा—थोड़ा रुककर।

तुम्हें सच में लगता है कि वो तारों में रहेंगे ?

मेघा थोड़ी सी उठकर बैठ गई—

क्यों ? नहीं रह सकते क्या ?

मामा ने आसमान की तरफ इशारा किया—

अभी मैंने बताया था बेटा की ये भी सूरज की तरह आग के गोले है। मेघा ने तुरंत बीच में कहा—

हाँ हाँ ! आग जैसे ?

आग से भी ज़्यादा गर्म, मामा ने कहा,

इतने कि वहाँ कुछ भी ठोस नहीं रह सकता।

मेघा ने भौंहें सिकोड़ लीं—

तो… वहाँ कोई रह ही नहीं सकता ?

तारों पर तो नहीं, मामा ने साफ़ कहा,

पर उनके आसपास जो ग्रह होते हैं… वहाँ हो सकता है।

मेघा ने तुरंत पकड़ लिया—

मतलब… जैसे हमारी पृथ्वी ?

बिल्कुल, मामा बोले,

पृथ्वी भी तो सूरज के चारों तरफ घूमने वाला एक ग्रह है।

मेघा कुछ क्षण चुप रही।

फिर धीरे से बोली—

तो अगर किसी और तारे के पास भी पृथ्वी जैसा कोई ग्रह हो…

तो वहाँ जीवन हो सकता है, मामा ने उसकी बात पूरी की।

मेघा की आँखें थोड़ी चमक उठीं—

तो एलियन सच में हो सकते हैं !

मामा ने सीधे हाँ या ना नहीं कहा।

हो भी सकते हैं… और नहीं भी।

फिर वही ! मेघा ने हल्की शिकायत की,

सीधा जवाब क्यों नहीं देते ?

मामा ने आसमान की तरफ देखा—

क्योंकि विज्ञान में जल्दी-जल्दी पक्के जवाब नहीं मिलते।

हवा थोड़ी तेज़ चली।

चारपाई हल्के से हिली।

पर इतने सारे तारे हैं… मेघा फिर बोली,

तो कहीं तो होगा न ?

मामा ने पूछा—

तुम्हें कितने तारे दिख रहे हैं ?

बहुत सारे… गिन नहीं पा रही, मेघा ने कहा।

और जो नहीं दिख रहे ? मामा ने पूछा।

मेघा थोड़ी रुकी—

मतलब ?

मामा बोले—

जो इतने दूर हैं कि हमें दिखते ही नहीं… उनकी संख्या और ज़्यादा है।

मेघा अब पूरी तरह ध्यान से सुन रही थी।

मामा ने धीरे से कहा—

एक वैज्ञानिक था—कार्ल सेगन… उसने कहा था…

हम खुद ब्रह्मांड को जानने का एक तरीका हैं।

मेघा ने तुरंत पूछा—

मतलब ?

मामा ने सरल तरीके से कहा—

मतलब… हम खुद उसी ब्रह्मांड का हिस्सा हैं, जिसे हम समझने की कोशिश कर रहे हैं।

कुछ पल के लिए दोनों चुप हो गए।

दूर से फिर कुत्ते की आवाज़ आई।

तो हम पता कैसे करेंगे ? मेघा ने पूछा।

मामा ने कहा—

देखकर… सवाल पूछकर… और बार-बार जाँच करके।

मतलब एक्सपेरीमेंट? मेघा ने तुरंत कहा।

मामा ने सिर हिलाया—

हाँ… यही विज्ञान का तरीका है।

तभी नीचे से मामी की आवाज़ आई—

अब सो भी जाओ दोनों ! रात बहुत हो गई है !

मेघा ने हल्का सा मुँह बनाया—

अभी तो बात शुरू हुई थी…

कल पूरी करेंगे, मामा ने कहा।

मेघा फिर लेट गई।

उसने एक बार फिर आसमान की ओर देखा—

अब तारे सिर्फ चमक नहीं रहे थे…

वह उनके बारे में सोच रही थी।

धीरे-धीरे उसकी आँखें बंद होने लगीं—

पर मन में एक बात अटकी रही—

अगर इतने सारे तारे हैं…

तो कहीं न कहीं… कोई और भी तो होगा।

दूरी — जो दिखता है, वह पास नहीं होता

छत पर अब और शांति हो गई थी।

अब लगभग सभी सदस्य सो चुके थे।

हवा अब थोड़ी ठंडी लगने लगी थी।

मेघा ने आँखें बंद की थीं…

पर नींद अभी दूर थी।

मामा… उसने फिर धीरे से कहा।

मामा ने बिना करवट बदले जवाब दिया—

अब क्या नया सवाल आ गया ?

ये जो तारे हैं… मेघा ने आसमान की तरफ देखते हुए कहा,

ये हमसे कितनी दूर हैं ?

मामा कुछ पल चुप रहे—

जैसे सोच रहे हों कि जवाब कैसे दें।

तुमने कभी बस से लंबा सफर किया है ? उन्होंने पूछा।

हाँ, मेघा बोली,

शहर से यहाँ आने में ही कितना टाइम लगा।, मामा बोले,

अब सोचो… अगर वही बस बिना रुके चलती रहे… दिन-रात… सालों तक…

मेघा ने तुरंत बीच में कहा—

इतनी लंबी सड़क है ही नहीं !

मामा ने हल्का-सा सिर घुमाया—

सड़क नहीं… बस समझने के लिए सोचो।

मेघा कुछ पल के लिए शांत हुई।

तो ? उसने पूछा।

तो भी… तुम किसी तारे तक नहीं पहुँच पाओगी, मामा ने कहा।

मेघा सीधी बैठ गई—

इतनी दूर ?

इतनी कि… मामा बोले,

हम दूरी नापने के लिए किलोमीटर भी इस्तेमाल नहीं करते।

तो क्या इस्तेमाल करते हैं ? मेघा ने तुरंत पूछा।

मामा ने आसमान की तरफ देखते हुए कहा—

प्रकाश।

मतलब लाइट? मेघा ने कहा।

हाँ, मामा बोले,

जो रोशनी तुम तक पहुँच रही है… वो भी समय लेती है।

मेघा थोड़ी उलझ गई—

मतलब ?

मामा ने पास रखी लालटेन की तरफ इशारा किया—

अगर मैं अभी इसे ऑन करूँ … तो रोशनी तुरंत दिखेगी न ?

हाँ, मेघा ने कहा।

क्योंकि वो पास है, मामा बोले,

लेकिन जो तारे हैं… वो इतने दूर हैं कि उनकी रोशनी को हम तक आने में सालों लग जाते हैं।

मेघा कुछ क्षण के लिए चुप रह गई।

फिर बोली—

मतलब… जो तारा मैं अभी देख रही हूँ..........

वह रुक गई।

मामा ने उसकी बात पूरी की—

वो शायद वैसा अब है ही नहीं।

मेघा की आँखें थोड़ी बड़ी हो गईं—

क्या मतलब ?

मतलब, मामा बोले,

तुम जो देख रही हो… वो उस तारे का पुराना रूप है—जैसा वो कई साल पहले था।

मेघा ने तुरंत आसमान की तरफ देखा—

जैसे वह किसी राज़ को पकड़ने की कोशिश कर रही हो।

तो… हम हमेशा पुराना देख रहे हैं ? उसने धीरे से पूछा।

दूर की चीज़ों को… हाँ, मामा ने कहा।

हवा अब और शांत हो गई थी।

तो ये ब्रह्मांड कितना बड़ा है ? मेघा ने फिर पूछा।

मामा ने थोड़ा लंबा साँस लिया—

इतना बड़ा… कि अभी तक किसी ने पूरा नहीं देखा।

मतलब कोई अंत नहीं है ? मेघा ने पूछा।

मामा ने सीधा जवाब नहीं दिया—

अभी तक तो नहीं मिला।

मेघा फिर लेट गई।

उसने हाथ उठाकर एक तारे की तरफ इशारा किया—

जैसे उसे छूने की कोशिश कर रही हो।

अगर मैं वहाँ जाऊँ… उसने कहा,

तो क्या मिलेगा ?

मामा ने हल्के स्वर में कहा—

पहले तो रास्ता ही खत्म नहीं होगा।

मेघा ने तुरंत कहा—

और अगर पहुँच गई तो ?

मामा बोले—

तब शायद… एक नया सवाल मिल जाएगा।

मेघा ने करवट बदली।

अब वह आसमान नहीं…

बस सोच रही थी।

कुछ देर बाद—

मामी की आवाज़ फिर आई—

अभी तक जाग रहे हो क्या ? सो जाओ !

इस बार आवाज़ में हल्की सख्ती थी।

मामा ने धीरे से कहा—

अब सच में सो जाओ।

मेघा ने आँखें बंद कीं—

पर मन अब भी दौड़ रहा था—

तारों के बीच…

दूर… बहुत दूर…

आकाशगंगा — तारों का घर

रात अब और शांत हो गई थी।

हवा धीमी पड़ चुकी थी,

और आसमान पहले से भी ज़्यादा साफ़ लग रहा था।

मेघा ने फिर आँखें खोलीं—

उसे लगा जैसे तारे और बढ़ गए हों।

मामा… उसने धीरे से कहा।

अब तो सो जाओ, मामा ने आँखें बंद रखते हुए कहा।

बस एक आखिरी सवाल, मेघा ने जल्दी से कहा।

मामा ने हल्का-सा साँस छोड़ा—

ठीक है… आखिरी।

ये सारे तारे… ऐसे ही बिखरे हुए हैं ? मेघा ने पूछा।

मामा ने आँखें खोलीं और आसमान की ओर देखा—

नहीं… ये बिखरे हुए नहीं हैं।

तो ? मेघा थोड़ा आगे खिसक आई।

मामा ने हाथ उठाकर आसमान में एक हल्की-सी धुँधली पट्टी की ओर इशारा किया—

उधर देखो… वो हल्की-सी सफेद लाइन दिख रही है ?

मेघा ने आँखें सिकोड़कर देखा—

हाँ… जैसे कोई धुआँ-सा हो।

वो धुआँ नहीं है, मामा बोले,

वो हमारी आकाशगंगा है।

आकाश… गंगा ? मेघा ने शब्द धीरे-धीरे दोहराया।

हाँ, मामा बोले,

तारों का बहुत बड़ा समूह… जिसमें हमारा सूरज भी है।

मेघा ने तुरंत कहा—

मतलब… हम भी उसी में हैं ?

हाँ, मामा ने कहा,

हम उसी आकाशगंगा के एक छोटे से कोने में रहते हैं।

मेघा कुछ पल के लिए चुप रह गई—

फिर बोली—

तो… ये सारे तारे उसी में हैं ?

मामा ने सिर हिलाया—

नहीं, जो तुम देख रही हो… उनमें से कुछ हमारी आकाशगंगा के हैं…

और कुछ उससे भी बाहर के।

बाहर भी ? मेघा ने तुरंत पूछा।

हाँ, मामा बोले,

ऐसी बहुत सारी आकाशगंगाएँ हैं।

मेघा ने थोड़ा सोचकर कहा—

मतलब… एक नहीं, बहुत सारी ?

बहुत सारी, मामा ने दोहराया।

मेघा ने आसमान की तरफ देखा—

अब उसे लगा जैसे वह सिर्फ तारे नहीं देख रही…

बल्कि एक बहुत बड़ी चीज़ का छोटा-सा हिस्सा देख रही है।

और हर तारे के पास ग्रह होते हैं? उसने पूछा।

मामा ने कहा—

हर एक के पास नहीं… लेकिन बहुत से तारों के पास होते हैं।

जैसे हमारा सूरज? मेघा ने पूछा।

हाँ, मामा बोले,

सूरज एक तारा है… और उसके चारों तरफ पृथ्वी जैसे ग्रह घूमते हैं।

मेघा ने तुरंत कहा—

तो एलियन ग्रह पर होंगे… तारे पर नहीं।

मामा ने उसकी तरफ देखा—

अब सही समझ आई।

तो हम कैसे पता करते हैं कि कहाँ ग्रह हैं? मेघा ने पूछा।

मामा ने कहा—

सीधे जाकर तो नहीं देख सकते…

तो हम अंदाज़ा लगाते हैं।

कैसे? मेघा ने पूछा।

मामा ने हाथ से गोल घुमाते हुए इशारा किया—

जब कोई ग्रह अपने तारे के सामने से गुजरता है…

तो तारे की रोशनी थोड़ी कम हो जाती है।

इतनी दूर से दिखता है? मेघा ने बीच में ही पूछा।

थोड़ा मुश्किल होता है, मामा बोले,

पर वैज्ञानिक वही देखते हैं—छोटी-छोटी चीज़ें।

मतलब अनुमान लगाते हैं ? मेघा ने पूछा।

मामा ने तुरंत कहा—

नहीं… अनुमान नहीं।

फिर थोड़ा रुककर बोले—

पहले देखते हैं…

फिर सोचते हैं…

फिर बार-बार जाँचते हैं।

मेघा चुप हो गई।

यही विज्ञान है ? उसने धीरे से पूछा।

मामा ने सिर हिलाया—

हाँ… धीरे-धीरे समझ आ जाएगा।

कुछ देर दोनों चुप रहे।

आसमान अब भी वैसा ही था—

पर मेघा के लिए वह पहले जैसा नहीं रहा।

नीचे से फिर मामी की आवाज़ आई—

अब सच में सो जाओ !

इस बार मेघा ने जवाब नहीं दिया।

बस धीरे से आँखें बंद कर लीं।

पर उसके दिमाग में अब भी घूम रहा था—

तारे…

ग्रह…

और उनके बीच कहीं…

एक अनजान दुनिया।

अगली सुबह — गाँव की लय और अधूरे सवाल

रात कब नींद में बदल गई, मेघा को पता ही नहीं चला। सुबह जब उसकी आँख खुली तो आसमान हल्का उजला हो चुका था। छत की ठंडी हवा अब भी चल रही थी। वह धीरे-धीरे उठकर नीचे आँगन में आई। आँगन में सुबह की अपनी ही एक लय थी—मामा एक कोने में खड़े दातून कर रहे थे, मामी तुलसी के चौरे में पानी डाल रही थीं, नानी भैंसों और गायों को चारा डालने में लगी थीं। मम्मी और नाना जी सुबह-सुबह खेतों की ओर टहलने निकल गए थे। सब कुछ बिना किसी जल्दबाज़ी के चल रहा था, जैसे हर काम अपने समय पर ही होना चाहिए।

थोड़ी देर बाद मामी सबके लिए चाय बनाकर ले आईं। मेघा भी आकर बैठ गई और चाय का कप हाथ में लिया। मामा ने एक घूँट लिया और बोले—मुझे तो लगता है, इस चाय से पेट में गैस हो जाती है। मामी ने सहज स्वर में कहा—तो छोड़ दीजिए। मामा ने कप की ओर देखा, फिर बोले—चलो, आज तो पी ही लेते हैं। मेघा यह सुनकर हल्का-सा मुस्कुरा दी।

कुछ देर बाद मामा ने कहा—चलो, भैंसों को तालाब तक ले चलते हैं। मेघा भी उनके साथ हो ली। गाँव की पगडंडी से होते हुए वे तालाब की ओर बढ़े। धूप अब ऊपर चढ़ रही थी, पर हवा में अभी भी सुबह की हल्की ठंडक बची थी। तालाब के पास पहुँचते ही एक अलग ही दृश्य सामने था—कुछ बड़े लोग पानी में उतरकर नहा रहे थे, कुछ किनारे बैठकर बातें कर रहे थे, और पेड़ की छाँव में बैठे बुज़ुर्ग यह सब देखकर मुस्कुरा रहे थे। पास ही एक बड़ा पीपल का पेड़ था, जिसकी मोटी टहनियों से कुछ बच्चे लटककर ज़ोर से पानी में कूद रहे थे—छपाक की आवाज़ के साथ पानी उछलता और फिर सब हँस पड़ते।

भैंसें धीरे-धीरे पानी में उतर गईं और कुछ ही देर में पानी में बैठ गईं—बस उनके सिर और पीठ ऊपर दिखाई दे रहे थे। मामा ने बिना ज़्यादा सोचे सीधे पानी में छलाँग लगा दी और आराम से भैंसों के पास जाकर बैठ गए। मेघा थोड़ी दूरी पर खड़ी यह सब देख रही थी। उसके चेहरे पर हल्का-सा आश्चर्य था—उसे समझ ही नहीं आ रहा

था कि लोग भैंसों के साथ उसी पानी में इतनी सहजता से कैसे नहा रहे हैं। शहर में तो यह सोच पाना भी मुश्किल था।

पानी में हँसी, छींटे और आवाज़ें मिलकर एक अलग ही माहौल बना रही थीं—जैसे यह कोई रोज़ का काम नहीं, बल्कि एक छोटा-सा उत्सव हो।

मेघा बस किनारे खड़ी सब देखती रही—उसके लिए यह सब नया था, थोड़ा अजीब भी, पर कहीं न कहीं दिलचस्प भी।

कुछ देर बाद मामा बाहर आए और दोनों वापस घर की ओर चल पड़े। अब धूप तेज़ हो चुकी थी। घर के बाहर नीम के पेड़ के नीचे ठंडी छाया थी। वहीं चारपाई डाल दी गई। हवा धीरे-धीरे चल रही थी।

मामा बैठ गए और मेघा की ओर देखकर बोले—

तो बताओ, अब तुम्हारे क्या सवाल हैं?

मेघा जैसे इसी पल का इंतज़ार कर रही थी—

वह तुरंत सीधी बैठ गई।

और वहीं से—

फिर से शुरू हुई उनकी बातचीत।

शुरुआत — एक विस्फोट से जन्मी दुनिया

नीम के पेड़ की छाया में हल्की हवा चल रही थी।

ऊपर धूप तेज़ थी,

पर नीचे बैठने में एक अलग-सी ठंडक थी।

मेघा चारपाई पर सीधी बैठी थी—

अब उसके चेहरे पर साफ़ दिख रहा था कि

वह जवाब सुनने के लिए तैयार है।

मामा… उसने कहा,

ये पूरा ब्रह्मांड बना कैसे है ?

मामा ने जमीन से एक छोटा-सा कंकड़ उठाया,

फिर उसे उँगलियों में दबाते हुए बोले—

विज्ञान के अनुसार... बहुत-बहुत समय पहले...

पूरा ब्रह्मांड एक बहुत छोटे बिंदु में सिमटा हुआ था।

कैसा बिंदु ? मेघा ने पूछा।

मामा बोले—

बहुत ज़्यादा घना...

और इतना गर्म कि उसकी कल्पना करना भी मुश्किल है।

उन्होंने थोड़ी देर रुककर कहा—

इसे हम सिंगुलैरिटी कहते हैं।

मेघा ने शब्द दोहराया—

सिंगुलैरिटी...

मतलब ऐसा बिंदु जहाँ सब कुछ एक साथ हो, मामा बोले।

फिर क्या हुआ ? मेघा ने तुरंत पूछा।

मामा ने हाथ से अचानक बाहर की ओर इशारा किया—

फिर एक जबरदस्त विस्फोट हुआ।

मेघा थोड़ी चौंकी—

जैसे बम फटता है ?

मामा ने सिर हिलाया—

कुछ वैसा... लेकिन उससे बहुत ज़्यादा शक्तिशाली।

इस विस्फोट को ही हम बिग बैंग कहते हैं, मामा बोले।

तो सब कुछ उड़ गया ? मेघा ने पूछा।

उड़ा नहीं… मामा बोले,

फैल गया… हर दिशा में… बहुत तेज़ी से।

उन्होंने हाथ से फैलने का इशारा किया—

और यह फैलना आज भी जारी है।

मेघा ध्यान से सुन रही थी।

शुरुआत में तापमान बहुत ज़्यादा था, मामा बोले,

इतना कि कोई परमाणु (एटम) भी नहीं बन सकता था।

फिर जैसे-जैसे यह फैलता गया…

उन्होंने धीरे-धीरे हाथ नीचे किया—

तापमान कम होने लगा।

और तब… उन्होंने कहा—

सबसे पहले छोटे-छोटे कण बने—जैसे इलेक्ट्रान, प्रोटोन, न्यूट्रॉन।

फिर ये मिलकर बने 'एटमस '…

और बहुत समय बाद…

इन एटमस से गैस के बड़े-बड़े बादल बने—जिन्हें हम नेबुला कहते हैं।

मेघा ने धीरे से कहा—

नेबुला…

हाँ, मामा बोले,

और उन्हीं नेबुला से तारे बने… और फिर उनके चारों तरफ ग्रह।

मेघा अब पूरी तरह उस दृश्य को अपने मन में देख रही थी—

जैसे एक बहुत बड़ा विस्फोट…

फिर फैलती रोशनी…

फिर धीरे-धीरे बनती दुनिया।

तो… हम भी उसी विस्फोट का हिस्सा हैं ? उसने पूछा।

मामा ने कहा—

हाँ… जो भी है… सब उसी शुरुआत से आया है।

हवा हल्की चली।

नीम के पत्ते हिले।

मेघा ने जमीन की ओर देखा—

फिर आसमान की तरफ—

जैसे दोनों को जोड़ रही हो।

तो ये सब अभी भी चल रहा है ? उसने पूछा।

हाँ, मामा बोले,

ब्रह्मांड आज भी फैल रहा है।

मेघा ने धीरे से कहा—

मतलब… ये कहानी अभी खत्म नहीं हुई…

मामा ने हल्का सा कहा—

अभी तो शुरू हुई है।

मेघा चुप हो गई।

अब उसके चेहरे पर सिर्फ सवाल नहीं थे—

बल्कि एक नई समझ की शुरुआत थी।

तारे, धूल और पृथ्वी का जन्म

नीम के पेड़ की छाया अब थोड़ी सरक गई थी।

धूप आँगन के एक हिस्से तक आ पहुँची थी,

पर हवा अब भी चल रही थी।

मेघा ध्यान से मामा की तरफ देख रही थी—

जैसे अब वह अगला हिस्सा जानने के लिए तैयार हो।

तो… उस विस्फोट के बाद, उसने कहा,

ये तारे और ग्रह कैसे बने ?

मामा ने जमीन से थोड़ी-सी धूल उठाई।

उसे हवा में हल्का सा उछाला—

धूल के कण कुछ पल के लिए हवा में तैरते रहे।

कल्पना करो, मामा बोले,

पूरा अंतरिक्ष ऐसे ही धूल और गैस से भरा हुआ था—बहुत बड़े-बड़े बादलों में।

ये वही नेबुला है ? मेघा ने पूछा।

हाँ, मामा ने कहा,

बहुत विशाल… लाखों-करोड़ों किलोमीटर तक फैले हुए।

फिर ये धूल ऐसे ही तैरती रही ? मेघा ने पूछा।

मामा ने सिर हिलाया—

नहीं… धीरे-धीरे एक ताकत काम करने लगी।

कौन-सी ताकत ? मेघा ने तुरंत पूछा।

मामा बोले—

ग्रेविटी।

उन्होंने हाथ से धूल को इकट्ठा करने का इशारा किया—

यह धूल और गैस एक-दूसरे को खींचने लगी…

और धीरे-धीरे एक जगह इकट्ठा होने लगी।

मेघा ध्यान से देख रही थी—

जैसे-जैसे यह इकट्ठा होता गया, मामा बोले,

बीच का हिस्सा और ज़्यादा घना और गर्म होता गया।

और फिर ? मेघा ने पूछा।

फिर, मामा बोले,

एक समय ऐसा आया जब वह इतना गर्म हो गया कि उसमें ऊर्जा पैदा होने लगी…

और तब…

एक तारा जन्मा।

मेघा ने धीरे से कहा—

मतलब सूरज भी ऐसे ही बना ?

हाँ, मामा बोले,

हमारा सूरज भी एक नेबुला से ही बना है।

और बाकी ? मेघा ने पूछा।

मामा ने हाथ से गोल घुमाने का इशारा किया—

जो धूल और गैस बची… वो सूरज के चारों तरफ घूमती रही।

धीरे-धीरे…

वो छोटे-छोटे टुकड़ों में जुड़ने लगी…

और उनसे बने ग्रह।

मेघा ने तुरंत कहा—

जैसे पृथ्वी !

बिल्कुल, मामा बोले।

लेकिन शुरुआत में पृथ्वी वैसी नहीं थी जैसी आज है, मामा ने आगे कहा।

कैसी थी ? मेघा ने पूछा।

बहुत गर्म… मामा बोले,

पूरी तरह पिघली हुई… जैसे आग का गोला।

मेघा थोड़ी चौंकी—

तो हम रहते कैसे ?

मामा बोले—

तब कोई नहीं रहता था।

दोनों कुछ पल चुप रहे।

फिर धीरे-धीरे… मामा बोले,

पृथ्वी ठंडी होने लगी।

ऊपर एक परत जमी—जिसे हम क्रस्ट कहते हैं।

और अंदर अब भी गर्मी बनी रही।

फिर ज्वालामुखी फटे… गैसें बाहर आईं…

और बहुत समय बाद…

वायुमंडल बना… और पानी आया।

मेघा ध्यान से सुन रही थी—

जैसे वह उस पूरी पृथ्वी को बनते हुए देख रही हो।

मतलब… पहले पानी नहीं था ? उसने पूछा।

नहीं, मामा बोले,

पानी बाद में आया—और वही सबसे खास चीज़ बनी।

हवा अब थोड़ी तेज़ चली।

मेघा ने धीरे से कहा—

तो पहले आग… फिर ठंडा… फिर पानी…

हाँ, मामा बोले,

और उसके बाद शुरू हुई… एक नई कहानी।

मेघा ने तुरंत पूछा—

कौन-सी ?

मामा ने उसकी तरफ देखा—

जीवन की।

मेघा अब पूरी तरह आगे झुक गई—

जैसे वह अगली कहानी सुनने के लिए तैयार हो

तो… जीवन कैसे शुरू हुआ ? उसने तुरंत पूछा।

मामा ने थोड़ा समय लिया—

फिर बोले—

याद है तुमने पूछा था—सबसे खास चीज़ क्या है ?

पानी, मेघा ने बिना सोचे कहा।

मामा ने सिर हिलाया—

हाँ… जीवन की शुरुआत भी पानी में ही हुई।

कैसे ? मेघा ने पूछा।

मामा ने जमीन पर उँगली से हल्का सा गोला बनाते हुए कहा—

बहुत-बहुत समय पहले…

जब पृथ्वी ठंडी हो गई थी…

तो उस पर बड़े-बड़े समुद्र बन गए थे।

और उन्हीं समुद्रों में…

कुछ बहुत छोटे-छोटे रासायनिक बदलाव होने लगे।

रासायनिक मतलब ? मेघा ने पूछा।

मतलब, मामा बोले,

छोटे-छोटे कण—एटमस—आपस में मिलकर नए रूप बनाने लगे।

जैसे ? मेघा ने पूछा।

जैसे छोटे-छोटे मोलेक्युल्स … मामा बोले,

और बहुत समय बाद… कुछ ऐसे मोलेक्युल्स बने जो खुद को दोहराने लगे।

मेघा ने भौंहें सिकोड़ लीं—

खुद को दोहराने लगे ?

हाँ, मामा बोले,

मतलब एक से दो… दो से चार…

जैसे कॉपी बन रही हो ? मेघा ने कहा।

बिल्कुल, मामा ने कहा।

और वही पहली बार… जीवन की शुरुआत थी।

मेघा कुछ पल के लिए चुप हो गई—

मतलब… बहुत छोटे-छोटे जीव ? उसने पूछा।

हाँ, मामा बोले,

इतने छोटे कि आँखों से दिखते भी नहीं।

फिर ? मेघा ने पूछा।

फिर, मामा बोले,

लाखों-करोड़ों सालों में… ये छोटे जीव बदलते गए।

कैसे ? मेघा ने पूछा।

मामा ने पास खड़े एक छोटे पौधे की ओर इशारा किया—

जैसे ये पौधा है…

अगर इसे अलग जगह रख दो—तो धीरे-धीरे उस जगह के हिसाब से बदल जाएगा।

मतलब ? मेघा ने पूछा।

मतलब, मामा बोले,

जो जीव अपने माहौल के हिसाब से बदल पाए… वो बच गए।

और जो नहीं बदल पाए…

वो खत्म हो गए।

मेघा ने धीरे से कहा—

तो… धीरे-धीरे नए जीव बने ?

हाँ, मामा बोले,

पहले छोटे… फिर बड़े…

फिर मछलियाँ… फिर ज़मीन पर आने वाले जीव…

और बहुत लंबे समय बाद…

उन्होंने मेघा की तरफ देखा—

इंसान।

मेघा कुछ पल के लिए चुप रही।

मतलब… हम भी उन्हीं से आए हैं ? उसने पूछा।

मामा ने कहा—

हाँ… बहुत लंबी यात्रा के बाद।

हवा थोड़ी तेज़ चली।

मेघा ने अपने हाथों को देखा—

फिर आसपास के पेड़, जानवर…

जैसे वह सबको एक ही कहानी से जोड़ रही हो।

तो… सब आपस में जुड़े हुए हैं ? उसने धीरे से पूछा।

मामा ने सिर हिलाया—

कहीं न कहीं… हाँ।

मेघा अब चुप हो गई।

इस बार उसके चेहरे पर सिर्फ सवाल नहीं थे—

बल्कि एक अजीब-सा एहसास था—

जैसे वह खुद को

एक बहुत बड़ी कहानी का हिस्सा समझने लगी हो।

खोज — जो दिखता नहीं, उसे कैसे जानें

मेघा अब भी सोच में थी—

मामा… उसने पूछा,

डायनासोर भी ऐसे ही बने थे ?

हाँ, मामा बोले,

धीरे-धीरे बदलते हुए… बहुत बड़े जीव बने।

तो फिर वो कहाँ गए ? मेघा ने पूछा।

मामा ने कहा—

एक बहुत बड़ा उल्का पिंड पृथ्वी से टकराया…

जिससे मौसम बदल गया… और बहुत से जीव खत्म हो गए।

मेघा चुप हो गई।

फिर उसने तुरंत पूछा—

पर हमें ये सब कैसे पता ?

मामा थोड़ा आगे झुके—

यही सबसे इंट्रेस्टिंग बात है।

उन्होंने जमीन से एक पत्थर उठाया—

मान लो तुम्हें ये जानना है कि यह पत्थर कितना पुराना है…

तो तुम क्या करोगी ?

देखूँगी, मेघा ने कहा।

बस देखना काफी नहीं होता, मामा बोले।

विज्ञान ऐसे काम करता है—

उन्होंने उँगलियों पर गिनाना शुरू किया—

1.देखना (Observation)

सबसे पहले… ध्यान से देखते हैं।

जैसे—यह पत्थर कैसा है ? इसका रंग, आकार, परतें…

2. सवाल करना (Question)

फिर सवाल उठता है—

यह बना कैसे ? कितना पुराना है ?

3. अनुमान लगाना (Hypothesis)

फिर एक अंदाज़ा लगाया जाता है—

शायद यह इतने साल पुराना होगा… या ऐसे बना होगा।

मेघा ने तुरंत कहा—

मतलब अनुमान ?

मामा ने सिर हिलाया—

थोड़ा-सा… पर सोच-समझकर।

4. जाँच करना (Experiment/Test)

फिर उस अंदाज़े को जाँचा जाता है—

जैसे कार्बन डेटिंग से उम्र पता करते हैं…

5.सबूत देखना (Evidence)

फिर देखा जाता है—

जो हमने सोचा था, वो सही है या नहीं।

6. बार-बार जाँचना (Re -Verification)

और अगर सही लगता है—

तो उसे बार-बार अलग-अलग तरीके से जाँचा जाता है।

मेघा ध्यान से सुन रही थी—

और अगर गलत निकला ? उसने पूछा।

मामा बोले—

तो उसे बदल दिया जाता है।

मेघा थोड़ी चौंकी—

मतलब… विज्ञान अपनी बात बदल देता है ?

मामा ने सिर हिलाया—

हाँ… अगर नया सबूत मिले तो।

फिर उन्होंने हल्की-सी मुस्कान के साथ कहा—

यही तो विज्ञान का जादू है—यह कभी रुकता नहीं, हमेशा सीखता रहता है।

मेघा कुछ पल के लिए उन्हें देखती रही—

जैसे पहली बार उसे विज्ञान

सिर्फ पढ़ाई नहीं…

बल्कि एक खोज जैसा लगने लगा हो।

फिर मामा बोले—

डायनासोर का भी ऐसे ही पता चला— जमीन की परतों में उनके जीवाश्म मिले, उनकी उम्र मापी गई और धीरे-धीरे पूरी कहानी समझ आई।

मेघा अब प्रभावित थी—

तो… विज्ञान एकदम से जवाब नहीं देता…

धीरे-धीरे बनाता है ? उसने कहा।

हाँ, मामा बोले,

जैसे पहेली सुलझाते हैं।

हवा हल्की चली।

फिर मेघा ने धीरे से पूछा—

तो क्या विज्ञान सब कुछ जान सकता है ?

मामा ने थोड़ी देर सोचा—

विज्ञान **'कैसे'** बताने में बहुत अच्छा है, उन्होंने कहा,

पर हर सवाल 'कैसे' का नहीं होता…

कुछ सवाल 'क्यों' के होते हैं।

मेघा चुप हो गई।

यह नया सवाल था—

और वहीं से…

एक नई दिशा शुरू होने वाली थी।

अध्याय 3

आस्था के पीछे का विज्ञान : क्या विश्वास सिर्फ मान लेना है, या उसके पीछे भी कोई गहरी संरचना छिपी है ?

सांझ — जहाँ 'क्यों' जन्म लेता है

नीम के पेड़ की छाया अब लगभग सिमट चुकी थी।

दोपहर ढल चुकी थी...

और वही जगह, जहाँ कुछ देर पहले विज्ञान की बातें हो रही थीं, अब शांत पड़ी थी।

मेघा अब भी वहीं बैठी थी—

पर उसके मन में कुछ बदल गया था।

कुछ सवाल 'कैसे' से नहीं... 'क्यों' से जुड़े होते हैं।

मामा की कही हुई यह बात उसके मन में बार-बार घूम रही थी।

धीरे-धीरे शाम उतरने लगी।

आसमान का रंग हल्का नीला से सुनहरा...

फिर नारंगी और फिर गहरा होता चला गया।

दूर खेतों की ओर से मम्मी और नाना जी लौटते दिखाई दिए।

उनके कदमों में थकान थी,

पर चेहरे पर एक अजीब-सी शांति।

आँगन में हलचल फिर से बढ़ने लगी।

नानी रसोई में लगी थीं—

आज उन्होंने खास मेघा के लिए दाल-चूरमा बनाया था।

घी की खुशबू पूरे घर में फैल गई थी।

मेघा ! आ जाओ, खाना तैयार है, नानी ने आवाज़ लगाई।

मेघा धीरे-धीरे उठी—

पर उसका मन अब भी कहीं और अटका हुआ था।

सब लोग आँगन में बैठकर खाना खाने लगे।

मिट्टी की हल्की खुशबू,

गर्म रोटी, दाल और चूरमा—

सब कुछ बहुत सादा था,

पर किसी तरह बहुत सुकून देने वाला भी।

कैसा लगा ? नानी ने पूछा।

बहुत अच्छा, मेघा ने कहा—

और सच में, उसे अच्छा लग रहा था।

पर उसके मन में एक और बात चल रही थी—

वह अचानक मामा की तरफ मुड़ी—

मामा…

हूँ ? मामा ने कहा।

आपने जो कहा था… 'क्यों' वाले सवाल…

मामा ने उसकी तरफ देखा—

जैसे उन्हें पता था कि बात यहीं से आगे बढ़ेगी।

लेकिन उन्होंने तुरंत कुछ नहीं कहा।

खाना खत्म हुआ।

आसमान अब पूरी तरह बदल चुका था—

सूरज डूब चुका था,

और हल्की-हल्की ठंडक उतरने लगी थी।

छत पर चारपाई डाल दी गईं।

मेघा आकर लेट गई—

पर इस बार वह आसमान को पहले जैसे नहीं देख रही थी।

तारे वही थे—

पर सवाल बदल गए थे।

कुछ देर बाद उसने धीरे से कहा—

मामा…

हाँ, मामा ने जवाब दिया।

अगर विज्ञान 'कैसे' बताता है…

वह थोड़ा रुकी—

तो 'क्यों' कौन बताता है?

हवा हल्की-सी चली।

पेड़ के पत्ते सरसराए।

मामा ने हथपन्खी चलाना धीमा कर दिया—

यह बहुत पुराना सवाल है, उन्होंने धीरे से कहा।

और वहीं से—

एक नई चर्चा शुरू हुई।

आरंभ — जब मनुष्य ने अर्थ खोजना शुरू किया

रात अब पूरी तरह उतर चुकी थी।

आसमान में तारे फिर से साफ़ दिखाई दे रहे थे—

पर इस बार मेघा उन्हें वैसे नहीं देख रही थी जैसे कल देख रही थी।

कल वह जानना चाहती थी—

वे क्या हैं।

आज उसके मन में सवाल था—

वे क्यों हैं।

छत पर चारपाइयां बिछी थीं।

हवा हल्की ठंडी हो गई थी।

दूर कहीं से कुत्तों के भौंकने की आवाज़ आ रही थी,

और बीच-बीच में किसी मंदिर की घंटी की हल्की ध्वनि।

मामा… मेघा ने धीरे से कहा।

हूँ… मामा ने जवाब दिया।

आपने कहा था ना… 'क्यों' वाले सवाल…

तो लोग पहले क्या सोचते थे ?

मामा ने आसमान की ओर देखा—

जैसे वे समय में पीछे जा रहे हों।

बहुत पहले… उन्होंने धीरे-धीरे कहना शुरू किया,

जब इंसान के पास न किताबें थीं… न विज्ञान…

तब भी उसके पास आसमान था…

बारिश थी…

बिजली थी…

और डर भी था।

सोचो, मामा बोले,

पहली बार जब किसी ने बिजली चमकते हुए देखी होगी…

तेज़ रोशनी… जोर की आवाज़…

डर गया होगा, मेघा ने तुरंत कहा।

हाँ, मामा बोले,

और उसने सोचा होगा—यह क्या है ?

जब जवाब नहीं मिला…

तो ? मेघा ने पूछा।

तो उसने अपने तरीके से जवाब बनाया, मामा बोले—

कहानी बनाकर… कि कोई शक्ति है… जो यह सब कर रही है।

मेघा थोड़ी आगे झुकी—

मतलब… लोगों ने भगवान को समझाने के लिए बनाया ?

मामा ने सीधे 'हाँ' नहीं कहा—

उन्होंने अपनी समझ के अनुसार…

दुनिया को अर्थ देने की कोशिश की, उन्होंने कहा।

धीरे-धीरे… मामा बोले,

इन कहानियों ने रूप लेना शुरू किया…

कहीं देवता बने…

कहीं नियम बने…

कहीं पूजा-पाठ शुरू हुआ…

और यही धीरे-धीरे धर्म बन गया।

मेघा कुछ पल चुप रही—

तो हर जगह अलग-अलग धर्म क्यों हैं ? उसने पूछा।

क्योंकि लोग अलग थे, मामा बोले,

उनकी भाषा अलग… अनुभव अलग…

पर सवाल एक जैसे थे।

कौन-से सवाल ? मेघा ने पूछा।

हम क्यों हैं ?

दुनिया क्यों है ?

मरने के बाद क्या होता है ?

मेघा चुप हो गई।

तो… सब धर्म एक ही बात कहते हैं ? उसने पूछा।

शब्द अलग हो सकते हैं, मामा बोले,

पर ज़्यादातर यही सिखाते हैं—

अच्छा बनो

सच बोलो

दूसरों का भला करो

पर लोग लड़ते भी हैं धर्म के नाम पर… मेघा ने कहा।

मामा का स्वर थोड़ा गंभीर हुआ—

धर्म नहीं…

लोग उसे गलत तरीके से इस्तेमाल करते हैं।

कुछ पल की खामोशी रही।

मेघा ने धीरे से पूछा—

क्या भगवान सच में होते हैं ?

मामा ने तुरंत जवाब नहीं दिया।

उन्होंने बस इतना कहा—

कल मैं तुम्हें एक जगह ले जाऊँगा… शायद तुम्हें इसका जवाब मिल जाए।

मेघा चुप रही।

वह आसमान की ओर देखती रही—

और उसके भीतर अब एक नई यात्रा शुरू हो चुकी थी—

'क्यों' को समझने की यात्रा।

यात्रा — एक नए रास्ते की ओर

सुबह की पहली किरणें अभी पूरी तरह फैली भी नहीं थीं कि आँगन में हलचल शुरू हो गई।

पक्षियों की आवाज़ें हवा में घुल रही थीं—

कहीं गौरैया चहक रही थी, कहीं दूर से मुर्गे की बांग सुनाई दे रही थी।

हवा ताज़ी थी... ठंडी... और बिल्कुल साफ़।

मेघा... उठ जाओ, मम्मी की आवाज़ आई।

मेघा ने आँखें खोलीं—

कुछ पल के लिए उसे याद ही नहीं आया कि आज क्या खास है।

फिर अचानक—

उसे रात की बात याद आई।

वह झट से उठ बैठी—

आज जाना है !

जल्दी-जल्दी तैयार होकर वह बाहर आई।

मामा पहले से ही तैयार खड़े थे—

हाथ में एक छोटा-सा कपड़ा और कंधे पर गमछा डाले।

इतनी जल्दी ? मेघा ने पूछा।

मामा बोले—

पहाड़ चढ़ना है... देर करोगी तो धूप परेशान करेगी।

मेघा ने तुरंत कहा—

चलते हैं !

मम्मी ने पीछे से आवाज़ लगाई—

कुछ खाकर जाओ।

नानी ने जल्दी से उसके हाथ में थोड़ा सा चूरमा और पानी दे दिया—

रास्ते में खा लेना।

गाँव से बाहर निकलते ही रास्ता बदल गया।

दोनों तरफ खुले खेत थे—

कुछ खाली पड़े…

कुछ में सूखी घास हिल रही थी।

दूर सामने एक छोटा-सा पहाड़ दिखाई दे रहा था—

बहुत ऊँचा नहीं…

पर अपने आसपास के मैदान से अलग।

वही है ? मेघा ने पूछा।

हाँ, मामा बोले,

उसी पर जाना है।

रास्ता अब थोड़ा चढ़ाई वाला होने लगा था।

मिट्टी में छोटे-छोटे पत्थर थे—

कहीं-कहीं झाड़ियाँ, कहीं नीम और पीपल के पेड़।

चलते-चलते मेघा ने कहा—

मामा…

हूँ ? मामा ने जवाब दिया।

कल आपने कहा था… धर्म जवाब देता है…

मामा ने सीधा जवाब नहीं दिया—

पहले थोड़ा चल लो, उन्होंने कहा।

मेघा ने हल्का सा मुँह बनाया—

हर बार ऐसा ही करते हो…

मामा ने बस इतना कहा—

कुछ बातें रास्ते में समझ आती हैं।

आगे थोड़ा ऊपर चढ़ते ही एक आदमी दिखाई दिया—

वह बकरियाँ चरा रहा था।

राम-राम, मामा ने कहा।

राम-राम, उसने मुस्कुराकर जवाब दिया।

मेघा ने धीरे से पूछा—

ये रोज़ यहीं रहते हैं ?

मामा बोले—

हाँ… इनका काम ही यही है।

बकरियाँ इधर-उधर घास चर रही थीं—

कुछ ऊँचे पत्थरों पर चढ़ गई थीं।

मेघा कुछ पल उन्हें देखती रही—

फिर अचानक बोली—

इनको पता होता है कहाँ जाना है ?

मामा ने हल्का सा कहा—

शायद… जितना उन्हें चाहिए, उतना पता होता है।

मेघा ने कुछ नहीं कहा—

पर उसके चेहरे पर हल्की सोच दिखाई दे रही थी।

चढ़ाई अब थोड़ी कठिन होने लगी थी—

साँस थोड़ी तेज़ चलने लगी।

मेघा रुकी—

थोड़ा आराम करें ?

मामा थोड़ा हँसे —

पास के एक पत्थर पर बैठ गए—

हाँ, थोड़ा रुकते हैं।

ऊपर की ओर देखने पर अब मंदिर की हल्की-सी आकृति दिखाई दे रही थी—

मेघा ने उसे देखा—

फिर धीरे से कहा—

मामा…

हाँ ?

क्या सच में वहाँ जवाब मिलेगा ?

मामा ने उसकी तरफ देखा—

जवाब जगह नहीं देती…

उन्होंने धीरे से कहा—

पर कभी-कभी… जगह हमें सोचने का तरीका दे देती है।

मेघा चुप हो गई।

हवा अब थोड़ा तेज़ चल रही थी—

और रास्ता अब और ऊपर जा रहा था।

दोनों फिर उठे—

और चढ़ाई की ओर बढ़ने लगे।

चढ़ाई — विश्वास के रास्ते

चढ़ाई अब थोड़ी कठिन हो गई थी।

रास्ता संकरा था—

कहीं मिट्टी, कहीं उभरे हुए पत्थर।

धूप धीरे-धीरे तेज़ होने लगी थी,

हालाँकि ऊपर से आती हवा उसे सहन करने लायक बना रही थी।

मेघा धीरे-धीरे चल रही थी—

साँस थोड़ी तेज़ हो गई थी,

पर आँखें अब भी इधर-उधर सब कुछ देख रही थीं।

मामा… उसने चलते-चलते कहा,

लोग मंदिर क्यों जाते हैं ?

मामा ने कदम धीमे किए—

तुम बताओ, उन्होंने पूछा,

तुम क्यों जा रही हो ?

मेघा थोड़ा सोचकर बोली—

आपने कहा था… जवाब मिलेगा।

और अगर न मिला तो ? मामा ने पूछा।

तो… फिर पूछूँगी, मेघा ने तुरंत कहा।

मामा ने बस हल्का सा सिर हिलाया—

थोड़ी दूर चलने के बाद मेघा रुक गई—

थोड़ा बैठें ?

पास ही एक पेड़ की छाँव थी।

दोनों वहाँ बैठ गए।

मामा ने कपड़े में बँधा चूरमा खोला—

लो, थोड़ा खा लो।

मेघा ने हाथ में थोड़ा सा लिया—

पसीना अब चेहरे पर साफ़ दिख रहा था।

उसने पानी पिया—

और गहरी साँस ली।

ऊपर जाना इतना आसान नहीं है, उसने कहा।

मामा ने कहा—

ऊपर जाने में हमेशा मेहनत लगती है।

मेघा ने उनकी तरफ देखा—

जैसे वह समझ रही हो कि यह बात सिर्फ पहाड़ की नहीं है।

कुछ देर आराम करने के बाद दोनों फिर उठे—

अब रास्ता और ऊपर जा रहा था।

सामने मंदिर की आकृति अब साफ़ दिखाई देने लगी थी।

बस… थोड़ा और, मामा ने कहा।

मेघा ने ऊपर देखा—

थकान अब भी थी…

पर उसके साथ एक उत्सुकता भी।

कुछ और कदम…

और फिर—

वे पहाड़ की चोटी पर पहुँच गए।

सामने छोटा-सा मंदिर था—

सादा… शांत…

चारों तरफ खुला आसमान...

और नीचे दूर तक फैला पूरा गाँव।

हवा यहाँ और तेज़ थी—

और एक अजीब-सी शांति भी थी।

मेघा कुछ पल वहीं खड़ी रही—

चारों तरफ देखती हुई।

फिर धीरे से बोली—

मामा...

हूँ? मामा ने कहा।

यही है वो जगह?

मामा ने कहा—

हाँ...

और अब—

उनकी बातचीत एक नए स्तर पर पहुँचने वाली थी।

मंदिर — जहाँ शब्द कम पड़ जाते हैं

मंदिर सादा पत्थरों से बना हुआ था। बिना किसी दिखावे के अपने साधारनतम रूप में शांति से विद्यमान था।

चारों तरफ खुला आसमान था—

और नीचे दूर तक फैला हुआ पूरा गाँव।

मेघा धीरे-धीरे मंदिर के अंदर गई—

उसके कदम अपने-आप धीमे हो गए थे।

अंदर एक सुंदर-सी भगवान कृष्ण की मूर्ति स्थापित थी—

मोरपंख सजा हुआ मुकुट,

चेहरे पर हल्की मुस्कान,

और हाथ में बांसुरी।

सामने एक दीपक धीमे-धीमे जल रहा था—

उसकी लौ हिलती तो मूर्ति का चेहरा जैसे जीवंत-सा लगने लगता।

आस-पास कोई शोर नहीं था—

बस एक गहरी, स्थिर शांति।

मेघा कुछ पल वहीं खड़ी रही—

मूर्ति को देखती हुई।

फिर धीरे से बोली—

मामा…

हूँ… मामा ने शांत स्वर में कहा।

यहाँ… कुछ अलग लग रहा है।

मामा ने पूछा—

कैसा ?

मेघा ने शब्द ढूँढ़ने की कोशिश की—

पता नहीं… बस… शांति-सी।

मामा ने हल्का सा सिर हिलाया—

इसी लिए लोग आते हैं यहाँ।

मेघा ने फिर पूछा—

पर यह शांति यहाँ क्यों मिलती है ?

मामा कुछ क्षण चुप रहे—

फिर बोले—

जब इंसान अपने मन को थोड़ी देर के लिए रोक देता है…

तो उसे शांति महसूस होती है।

मतलब… मंदिर जरूरी नहीं ? मेघा ने पूछा।

मामा ने कहा—

जरूरी जगह नहीं होती…

जरूरी अवस्था होती है।

मेघा कुछ पल चुप रही—

फिर उसने मूर्ति की ओर देखा—

तो… भगवान यहाँ हैं ? उसने पूछा।

मामा ने उसकी ओर देखा—

तुम्हें क्या लगता है ?

मेघा ने धीरे से कहा—

पता नहीं…

हवा तेज़ चली—

दीपक की लौ हल्की-सी काँपी।

तभी मंदिर के एक कोने से धीमी-सी आवाज़ आई—

जो खोजता है… उसे कुछ न कुछ जरूर मिलता है।

मेघा चौंककर उस दिशा में देखने लगी।

वहाँ एक साधु बैठे थे—

शांत… स्थिर…

जैसे वह कब से वहीं बैठे हों।

उनकी आँखें आधी बंद थीं—

पर चेहरे पर एक गहरी शांति थी।

मेघा थोड़ा आगे बढ़ी—

आपने कहा ? मेघा बोली।

साधु ने धीरे से आँखें खोलीं—

उनकी नजर सीधी मेघा पर पड़ी।

हाँ, उन्होंने शांत स्वर में कहा।

पर जो मिलता है…

वह हमेशा वही नहीं होता… जो हम सोचते हैं।

मेघा कुछ पल चुप रही—

फिर धीरे से बोली—

मतलब ?

साधु के चेहरे पर हल्की मुस्कान आई—

तुम यहाँ जवाब लेने आई हो…

पर शायद तुम्हें सवाल मिल जाएँ।

मेघा एकदम शांत हो गई।

मामा यह सब चुपचाप देख रहे थे—

मंदिर में वही शांति थी—

पर अब उसमें एक नई गहराई जुड़ चुकी थी।

प्रश्न — जो भीतर से उठते हैं

मंदिर के अंदर हवा भी जैसे धीमी हो गई थी।

दीपक की लौ स्थिर थी—

और उसी रोशनी में सब कुछ शांत, गहरा और ठहरा हुआ लग रहा था।

मेघा अब भी साधु को देख रही थी—

उसके मन में सवाल थे,

पर शब्द धीरे-धीरे बन रहे थे।

अगर सवाल ही मिलते हैं… उसने धीरे से कहा,

तो जवाब कहाँ मिलते हैं ?

साधु ने उसकी ओर देखा—

उनकी आँखों में न कोई जल्दी थी, न कोई आग्रह।

तुम्हें क्या लगता है ? उन्होंने पूछा।

मेघा थोड़ी असहज हुई—

मुझे नहीं पता…

साधु ने कहा—

अच्छा है।

मेघा ने तुरंत पूछा—

अच्छा कैसे ?

साधु बोले—

क्योंकि जो 'नहीं जानता'… वही सच में खोजता है।

मेघा कुछ पल चुप रही—

फिर बोली—

पर लोग कहते हैं—भगवान हैं…

और कुछ लोग कहते हैं—नहीं हैं…

तो सच क्या है ?

साधु ने सीधे जवाब नहीं दिया—

उन्होंने धीरे से पूछा—

तुम्हारे लिए भगवान क्या हैं ?

मेघा एकदम चुप हो गई।

उसने कभी इस तरह नहीं सोचा था।

मुझे नहीं पता… उसने कहा।

साधु ने कहा—

यही से शुरुआत होती है।

मामा अब भी शांत बैठे थे—

कुछ लोग भगवान को एक शक्ति मानते हैं… साधु बोले,

कुछ उसे एक रूप में देखते हैं…

और कुछ उसे मानते ही नहीं…

पर असली सवाल यह नहीं है कि भगवान हैं या नहीं…

वे थोड़ा रुके—

सवाल यह है कि तुम क्या खोज रही हो।

मेघा ने उनकी ओर देखा—

मैं… समझना चाहती हूँ, उसने धीरे से कहा।

साधु के चेहरे पर हल्की मुस्कान आई—

समझ बाहर नहीं मिलती…

उसे महसूस करना पड़ता है।

मेघा थोड़ा उलझ गई—

कैसे ?

साधु ने मंदिर के बाहर की ओर इशारा किया—

जब तुम शांत होती हो…

जब तुम्हारा मन रुकता है…

तब तुम चीज़ों को अलग तरह से देखने लगती हो।

मेघा ने कुछ नहीं कहा—

वह बस सुन रही थी।

धर्म का असली उद्देश्य डराना नहीं है, साधु बोले—

बल्कि इंसान को अपने भीतर देखने के लिए प्रेरित करना है।

पर लोग डरते क्यों हैं ? मेघा ने पूछा।

साधु ने कहा—

क्योंकि उन्हें सिखाया गया है—डर से मानो…

जबकि समझना और मानना दो अलग - अलग बातें है।

मामा ने पहली बार धीरे से कहा—

और समझ में समय लगता है।

मेघा ने उनकी ओर देखा—

फिर साधु की ओर—

तो… क्या भगवान को देखा जा सकता है ? उसने पूछा।

साधु ने हल्का सा सिर हिलाया—

जिसे तुम 'देखना' कहती हो…

वह शायद नहीं…

पर जिसे 'महसूस' कहते हैं…

वह संभव है।

मंदिर में फिर से वही शांति फैल गई।

मेघा अब कुछ नहीं पूछ रही थी—

पर उसके अंदर बहुत कुछ चल रहा था।

पहली बार—

उसे लगा कि जवाब बाहर नहीं…

शायद कहीं और हैं।

भेद — जब राहें अलग दिखती हैं

ऊपर खुला आसमान था—

और नीचे दूर-दूर तक फैला हुआ गाँव।

मेघा मंदिर की सीढ़ियों पर आकर बैठ गई—

मामा और साधु भी पास ही थे।

कुछ देर तक कोई कुछ नहीं बोला।

फिर मेघा ने धीरे से पूछा—

अगर धर्म इंसान को समझने के लिए है…

वह थोड़ा रुकी—

तो फिर इतने सारे धर्म क्यों हैं?

साधु ने उसकी ओर देखा—

तुम्हें रास्ते पसंद हैं या मंज़िल? उन्होंने पूछा।

मेघा थोड़ा चौंकी—

मतलब?

अगर तुम्हें किसी जगह पहुँचना हो, साधु बोले,

तो क्या सिर्फ एक ही रास्ता होता है?

नहीं… मेघा ने कहा।

बस, साधु बोले,

मंज़िल एक हो …

फिर भी उसके रास्ते अलग-अलग हो सकते हैं।

मेघा कुछ पल चुप रही—

मतलब… धर्म अलग हैं, पर उद्देश्य एक हो सकता है ? उसने पूछा।

हो सकता है, साधु बोले।

मामा ने धीरे से कहा—

जैसे अलग-अलग भाषाएँ…

शब्द अलग… पर अर्थ एक।

मेघा ने सिर हिलाया—

जैसे वह समझने लगी हो।

फिर उसने पूछा—

पर लोग धर्म के नाम पर लड़ते क्यों हैं ?

इस बार साधु कुछ क्षण चुप रहे।

फिर बोले—

जब इंसान रास्ते को ही मंज़िल समझ लेता है…

तो वह दूसरे रास्तों को गलत मानने लगता है।

मेघा ने तुरंत कहा—

मतलब… वह सोचता है कि वही सही है ?

हाँ, साधु बोले।

मामा ने जोड़ा—

और जब उसमें स्वार्थ जुड़ जाता है…

तो बात और बिगड़ जाती है।

स्वार्थ ? मेघा ने पूछा।

सत्ता… ताकत… भीड़… मामा बोले,

कुछ लोग धर्म का इस्तेमाल करने लगते हैं…

लोगों को जोड़ने के लिए नहीं…

बल्कि उन्हें अपने हिसाब से चलाने के लिए।

मेघा का चेहरा थोड़ा गंभीर हो गया—

तो फिर... असली धर्म क्या है ? उसने पूछा।

साधु ने हल्का सा मुस्कुराकर कहा—

जो जोड़ता है... वही धर्म है।

और जो तोड़ता है...

वे थोड़ा रुके—

वह धर्म नहीं... उसका इस्तेमाल है।

नीचे से किसी की आवाज़ आई—

शायद कोई बकरियाँ हाँक रहा था।

मेघा ने दूर देखा—

फिर धीरे से बोली—

तो... हमें कैसे पता चलेगा कि क्या सही है ?

साधु ने उसकी ओर देखा—

जो तुम्हें भीतर से शांत करे...

जो दूसरों के लिए अच्छा हो...

और जिसमें डर कम... समझ ज़्यादा हो...

वही सही के करीब होता है।

मेघा चुप हो गई।

अब उसके चेहरे पर उलझन कम थी—

और सोच थोड़ी साफ़।

उसने एक बार फिर मंदिर की ओर देखा—

फिर आसमान की तरफ—

जैसे वह समझने लगी हो कि

रास्ते अलग हो सकते हैं…

पर खोज एक ही है।

भीतर — जहाँ उत्तर जन्म लेते हैं

हवा अब पहले से कुछ धीमी हो गई थी।

सूरज धीरे-धीरे ढलने लगा था—

उसकी रोशनी अब तीखी नहीं, नरम और सुनहरी हो गई थी।

मंदिर की सीढ़ियों पर बैठे हुए—

तीनों कुछ देर तक चुप रहे।

यह खामोशी खाली नहीं थी—

जैसे उसमें भी कुछ कहा जा रहा हो।

मेघा अब नीचे गाँव की तरफ नहीं देख रही थी—

न ही मंदिर की ओर—

वह बस सामने देख रही थी…

और शायद पहली बार…

अपने भीतर।

मामा… उसने धीरे से कहा—

हूँ… मामा ने जवाब दिया।

अगर सब धर्म अलग-अलग रास्ते हैं…

तो… सही रास्ता कौन-सा है ?

मामा कुछ कह पाते—

उससे पहले ही साधु ने कहा—

तुम्हें क्या लगता है ?

मेघा ने इस बार जल्दी जवाब नहीं दिया।

वह कुछ सोचती रही—

फिर बोली—

शायद… जो हमें सही लगे ?

साधु ने हल्का सा सिर हिलाया—

और जो तुम्हें सही लगे…

वह हमेशा सही होगा ?

मेघा चुप हो गई।

सवाल सरल था—

पर जवाब आसान नहीं।

कभी-कभी… हम गलत भी हो सकते हैं, उसने धीरे से कहा।

साधु मुस्कुराए—

यही समझ… शुरुआत है।

धर्म का असली काम तुम्हें जवाब देना नहीं है, साधु बोले—

बल्कि तुम्हें इतना सजग बनाना है…

कि तुम खुद अपने उत्तर खोज सको।

मेघा ध्यान से सुन रही थी—

पर कैसे पता चलेगा कि मेरा उत्तर सही है ? उसने पूछा।

साधु ने कहा—

जब तुम्हारा उत्तर तुम्हें भीतर से शांत करे…

और दूसरों को दुख न दे…

तो वह उत्तर गलत नहीं हो सकता।

मेघा ने धीरे से सिर हिलाया।

कुछ पल के लिए फिर वही शांति छा गई।

दूर आसमान में सूरज अब और नीचे जा चुका था—

आसमान का रंग बदल रहा था—

सुनहरे से नारंगी… और फिर हल्का-सा लाल।

मेघा ने उस दृश्य को देखा—

और फिर धीरे से कहा—

मामा…

हाँ ? मामा ने पूछा।

अगर हर चीज़ को समझना पड़ता है…

तो… क्या सिर्फ मान लेना काफी नहीं है ?

मामा ने उसकी ओर देखा—

पर इस बार जवाब देने से पहले उन्होंने साधु की तरफ देखा।

साधु ने शांत स्वर में कहा—

मानना आसान है…

समझना कठिन।

वे थोड़ा रुके—

पर जो समझता है…

उसे मानने की ज़रूरत नहीं पड़ती।

मेघा चुप हो गई।

यह बात उसके भीतर कहीं गहराई तक चली गई थी।

अब उसके सवाल कम नहीं हुए थे—

पर उनका स्वर बदल गया था।

अब वह जवाब नहीं ढूँढ़ रही थी—

बल्कि समझने की दिशा में चल पड़ी थी।

अवतरण — जब यात्रा भीतर उतरती है

सूरज अब धीरे-धीरे नीचे झुकने लगा था।

ऐसा लग रहा था जैसे वह दूर गाँव के पीछे कहीं छिपता जा रहा हो—

धीरे-धीरे धरती के किनारे से लिपटता हुआ।

आसमान का रंग बदल रहा था—

नारंगी से लाल… और फिर हल्का-सा सुनहरा।

हवा अब ठंडी हो गई थी।

मंदिर के आसपास वही शांति थी—

पर अब उसमें एक अलग-सी गहराई महसूस हो रही थी।

चलें ? मामा ने धीरे से कहा।

मेघा ने एक बार फिर मंदिर की ओर देखा—

तभी साधु ने आँखें खोलीं।

उन्होंने बिना कुछ कहे पास रखा थोड़ा-सा प्रसाद उठाया—

और मेघा की ओर बढ़ा दिया।

मेघा ने दोनों हाथ आगे बढ़ाए—

धीरे से प्रसाद लिया।

फिर साधु ने मामा की ओर भी प्रसाद बढ़ाया—

मामा ने हल्के से सिर झुकाकर उसे ग्रहण किया।

जाते समय साथ ले जाओ… साधु ने शांत स्वर में कहा,

याद के लिए नहीं… अनुभव के लिए।

मेघा ने उनकी ओर देखा—

पर इस बार उसने कोई सवाल नहीं किया।

फिर वह मामा के साथ नीचे उतरने लगी।

पहाड़ से उतरना आसान था—

पर रास्ता अब भी सावधानी मांग रहा था।

मेघा धीरे-धीरे कदम रख रही थी—

पर इस बार उसका ध्यान सिर्फ रास्ते पर नहीं था—

उसका मन अब भी ऊपर ही कहीं था—

मंदिर में…

उन बातों में…

उन सवालों में…

कुछ देर दोनों चुपचाप चलते रहे।

फिर मेघा ने कहा—

मामा…

हूँ… मामा ने जवाब दिया।

आज… मुझे लगा…

वह थोड़ा रुकी—

जैसे जवाब मिल भी रहे हैं… और नहीं भी।

मामा ने उसकी ओर देखा—

ऐसा ही होता है, उन्होंने कहा।

जब हम समझने की शुरुआत करते हैं…

तो सवाल खत्म नहीं होते…

बस बदल जाते हैं।

मेघा ने धीरे से सिर हिलाया—

पहले मैं जानना चाहती थी कि भगवान हैं या नहीं…

अब… वह रुकी—

अब लगता है… सवाल कुछ और है।

मामा ने पूछा—

क्या ?

मेघा ने धीरे से कहा—

कि… सच क्या है ?

आसमान अब गहरा होने लगा था—

दूर गाँव की ओर छोटे-छोटे दीये और बल्ब जलने लगे थे।

मामा कुछ क्षण चुप रहे—

फिर बोले—

यह सवाल… धर्म से थोड़ा आगे जाता है।

मेघा ने उनकी तरफ देखा—

मतलब ?

मामा ने कहा—

जब हम सिर्फ मानना या न मानना छोड़ देते हैं…

और सच में समझना चाहते हैं…

तो हम एक और रास्ते पर आ जाते हैं।

मेघा ध्यान से सुन रही थी—

उसे कहते हैं—‘दर्शन’।

मेघा ने धीरे से शब्द दोहराया—

दर्शन…

दोनों अब पहाड़ के आधे रास्ते तक पहुँच चुके थे।

नीचे गाँव की रोशनियाँ जगमगाने लगी थीं—

और ऊपर आसमान में तारे फिर से दिखाई देने लगे थे।

मेघा ने एक बार फिर ऊपर देखा—

और इस बार—

उसके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान थी।

जैसे वह समझ गई हो—

कि यह यात्रा अभी खत्म नहीं हुई…

बल्कि अभी शुरू हुई है।

अध्याय 4

दर्शन के पथ : जहाँ हर उत्तर एक नया प्रश्न बन जाता है... और सोच की सीमाएँ टूटने लगती हैं।

वापसी — थकान, सपना और संदेह

जब तक मेघा और मामा पहाड़ से उतरकर घर पहुँचे—

तब तक रात पूरी तरह उतर चुकी थी।

आसमान गहरा हो गया था—

और दूर-दूर घरों की हल्की रोशनियाँ टिमटिमा रही थीं।

आँगन में पहुँचते ही नानी की आवाज़ आई—

इतनी देर कर दी तुम लोगों ने ! खाना भी ठंडा हो गया है।

मम्मी ने तुरंत कहा—

रुको, मैं अभी गरम कर देती हूँ।

मामा मुस्कुराकर चारपाई पर बैठ गए—

पर मेघा चुप थी।

वह थक चुकी थी—

सिर्फ शरीर से नहीं...

मन से भी।

मम्मी ने जल्दी-जल्दी खाना गरम किया—

और सब आँगन में बैठकर खाने लगे।

मेघा ने बिना ज्यादा कुछ बोले—

जल्दी-जल्दी खाना खाया।

इतनी चुप क्यों हो ? मम्मी ने पूछा।

थक गई हूँ… मेघा ने बस इतना कहा।

और सच में—

वह पूरी तरह थक चुकी थी।

खाना खत्म होते ही—

वह अपनी चारपाई पर जाकर लेट गई।

आसमान में तारे साफ़ दिखाई दे रहे थे—

पर आज उसने उन्हें देखने की कोशिश भी नहीं की।

आँखें बंद होते ही—

नींद ने उसे अपने अंदर खींच लिया।

और फिर—

सपना शुरू हुआ।

उसे लगा—

जैसे वह आसमान में उड़ रही है।

हवा तेज़ थी—

पर उसे डर नहीं लग रहा था।

वह ऊपर… और ऊपर जाती जा रही थी—

तारों के पास।

उसने हाथ बढ़ाया—

एक तारे को पकड़ने की कोशिश की—

पर जैसे ही वह और करीब पहुँची—

सब कुछ बदलने लगा।

आसमान गहरा हो गया—

हवा तेज़ से तेज़ होती गई—

और अचानक—

उसका संतुलन बिगड़ गया।

वह नीचे गिरने लगी।

तेज़… बहुत तेज़…

नीचे अंधेरा था—

कुछ भी साफ़ दिखाई नहीं दे रहा था।

उसने चीखने की कोशिश की—

पर आवाज़ जैसे बाहर ही नहीं आ रही थी।

तभी—

किसी ने उसका हाथ पकड़ लिया।

मजबूती से।

गिरना रुक गया।

मेघा ने ऊपर देखा—

पर चेहरा साफ़ नहीं दिखा।

बस एक एहसास था—

कि कोई है।

और अगले ही पल—

सब कुछ गायब हो गया।

मेघा की आँख खुल गई।

वह अचानक उठकर बैठ गई—

उसकी साँसें तेज़ चल रही थीं—

और पूरे शरीर पर पसीना था।

कुछ पल तक वह समझ ही नहीं पाई—

कि वह कहाँ है।

फिर धीरे-धीरे उसे अहसास हुआ—

वह अपने घर में है… अपनी चारपाई पर।

उसने चारों ओर देखा—

गहरा अंधेरा था।

और बीच-बीच में हवा की आवाज़।

उसने समय देखा—

रात के दो बजे थे।

मेघा धीरे-धीरे उठी—

और चारपाई से नीचे उतर गई।

वह बाहर की ओर देखने लगी—

हर चीज़ वही थी—

पर उसे अजीब लग रही थी।

जैसे हर चीज़ पर संदेह हो—

क्या यह सच है…

या अभी भी सपना चल रहा है ?

उसने हाथ से चारपाई को छुआ—

दीवार को छुआ—

सब कुछ असली था—

पर उसका मन मानने को तैयार नहीं था।

कुछ देर वह वहीं खड़ी रही—

चुप… सोचती हुई।

फिर उसने धीरे से गहरी साँस ली—

और वापस जाकर लेट गई।

इस बार उसने आँखें बंद कीं—

और खुद को शांत करने की कोशिश की।

धीरे-धीरे—

उसे फिर से नींद आ गई।

मानसी — शरारत, कहानी और रहस्य

सुबह की हल्की धूप आँगन में उतर आई थी।

पक्षियों की चहचहाहट फिर से शुरू हो चुकी थी—

और रात का सन्नाटा अब पूरी तरह टूट चुका था।

मेघा की आँख धीरे-धीरे खुली।

कुछ पल तक वह चुप लेटी रही—

जैसे वह तय कर रही हो कि

रात का सपना… सच था या सिर्फ सपना।

जाग गई ? नानी की आवाज़ आई।

हाँ… मेघा ने कहा।

जल्दी आ जाओ, चाय रखी है, नानी बोलीं।

मेघा नीचे आई—

आँगन में वही रोज़ की हलचल थी।

चाय पीते-पीते उसने नानी से पूछा—

नानी… यहाँ पास में जो लड़की रहती है… उसका नाम क्या है ?

नानी ने कहा—

अरे, मानसी … पड़ोस वाले मामा जी की लड़की।

तेरी ही उम्र की है… बस थोड़ी शरारती है, नानी मुस्कुराईं।

इतना ही कहा था कि—

गली से तेज़ आवाज़ आई—

मेघा !

मेघा ने मुड़कर देखा—

एक लड़की तेज़ कदमों से अंदर आई—

आँखों में चमक, चेहरे पर शरारती मुस्कान।

मैं मानसी हूँ ! उसने बिना रुके कहा—

और तुम मेघा हो… मुझे सब पता है !

मेघा हल्का-सा हँस पड़ी—

अच्छा ? क्या पता है ?

मानसी ने तुरंत कहा—

शहर से आई हो… दसवीं में हो… और बहुत पढ़ाकू हो !

ऐसा कुछ नहीं है, मेघा ने कहा।

देख लेंगे, मानसी ने आँख मारते हुए कहा।

नानी मुस्कुराकर बोलीं—

ले जाओ इसे, घुमा लाओ गाँव।

बस इसी का इंतज़ार था ! मानसी ने कहा।

दोनों बाहर निकल गईं।

गाँव की गलियों में चलते हुए—

मानसी हर चीज़ के बारे में बताती जा रही थी—

यह हमारा स्कूल…

वहाँ तालाब…

और उधर… सबसे मज़ेदार जगह !

चलते-चलते वह अचानक रुकी—

और सामने की ओर इशारा किया।

मेघा ने देखा—

वही पुरानी हवेली।

टूटी दीवारें…

खामोश खिड़कियाँ…

और एक अजीब-सा सन्नाटा।

मेघा ने हल्की मुस्कान के साथ कहा—

यह… वही भूतिया हवेली है ना ?

मानसी तुरंत उसकी तरफ मुड़ी—

तुम्हें कैसे पता ?

मामा ने दिखाई थी, मेघा ने कहा।

मानसी की आँखें चमक उठीं—

अच्छा ! तो तुम पहले से जानती हो…

वह थोड़ा पास आकर धीमे स्वर में बोली—

मैंने तो भूत देखा भी है।

मेघा ने तुरंत उसकी ओर देखा—

सच में ?

मानसी ने थोड़ा गर्व से कहा—

हाँ ! पिछले साल…

वह थोड़ा रुककर कहानी के अंदाज़ में बोली—

हम सब दोस्त रात को यहाँ आए थे…

पहले तो सब हँस रहे थे… किसी को डर नहीं लग रहा था…

फिर अचानक…

उसने हाथ से हवेली की ओर इशारा किया—

वो खिड़की… अपने आप हिलने लगी।

मेघा ध्यान से सुन रही थी।

और अंदर से आवाज़ आई…

जैसे कोई चल रहा हो…

मानसी की आवाज़ अब धीमी हो गई थी—

हम सब डर गए…

पर मैं रुकी रही…

और तभी…

वह एकदम रुक गई—

मैंने देखा…

एक परछाई…

बस एक पल के लिए…

और फिर गायब।

कुछ पल दोनों चुप रहीं।

हवा हल्की चली—

मेघा ने हवेली की तरफ देखा—

और उसके मन में एक अजीब-सा मिश्रण था—

डर…

जिज्ञासा…

और संदेह।

सच में देखा था ? उसने धीरे से पूछा।

मानसी ने मुस्कुराकर कहा—

पता लगाना है ?

मेघा कुछ नहीं बोली—

पर उसके मन में फिर वही सवाल उठ गया—

क्या जो हम देखते हैं… वही सच होता है ?

चुनौती — डर और जिज्ञासा के बीच

हवेली के सामने खड़ी मेघा अब भी उसे ध्यान से देख रही थी।

टूटी दीवारें…

खामोश खिड़कियाँ…

और एक अजीब-सा सन्नाटा।

हवा हल्की-हल्की चल रही थी—

जिससे खिड़कियाँ कभी-कभी अपने आप हिल जातीं—

चर्र…

तो… तुमने सच में कुछ देखा था ? मेघा ने पूछा।

मानसी ने थोड़ा रुककर कहा—

हाँ… कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगा।

मेघा कुछ पल चुप रही—

फिर अचानक बोली—

तो चलो… आज रात आते हैं यहाँ।

मानसी एकदम चौंकी—

क्या ? रात में ?

हाँ, मेघा ने सहजता से कहा।

नहीं-नहीं… मानसी ने तुरंत सिर हिलाया—

मैं नहीं आ रही।

मेघा ने हल्का-सा मुस्कुराकर कहा—

अरे… इतनी डरपोक मत बनो।

मानसी ने तुरंत उसकी ओर देखा—

मैं डरपोक नहीं हूँ !

वह कुछ पल चुप रही—

जैसे सोच रही हो।

फिर बोली—

ठीक है… आते हैं रात को।

मेघा ने हल्की मुस्कान के साथ कहा—

बस, यही तो चाहिए था।

दोनों ने एक बार फिर हवेली की ओर देखा—

अब वह सिर्फ एक पुरानी इमारत नहीं लग रही थी—

बल्कि जैसे कोई चुनौती हो।

फिर दोनों वापस घर की ओर चल पड़ीं।

गाँव की गलियाँ अब दोपहर की धूप में शांत हो चुकी थीं—

पर मेघा के मन में हलचल थी।

रात का इंतज़ार…

पर जब शाम हुई—

और मेघा ने बाहर जाने की बात की—

नानी ने तुरंत मना कर दिया—

रात में बाहर नहीं निकलना, उन्होंने सख्ती से कहा।

लेकिन… मेघा कुछ कहती—

कोई लेकिन-वेकिन नहीं, नानी ने साफ़ कहा।

मानसी ने भी धीरे से कहा—

कोई बात नहीं… कल चलेंगे।

मेघा चुप हो गई—

योजना बन गई थी…

पर अधूरी रह गई।

रात को खाना खाने के बाद—

मेघा चारपाई पर लेटी थी।

कुछ देर तक वह छत की ओर देखती रही—

फिर उसने धीरे से पूछा—

मामा…

हूँ ? मामा ने कहा।

क्या भूत सच में होते हैं ?

मामा ने तुरंत जवाब नहीं दिया—

फिर हल्के से बोले—

यह तो तुम्हें खुद ही खोजना होगा।

मेघा कुछ पल चुप रही—

फिर उसने आँखें बंद कर लीं।

आज उसके मन में डर कम था—

जिज्ञासा ज़्यादा।

और धीरे-धीरे—

वह नींद में खो गई।

खेत — जहाँ विचार अंकुरित होते हैं

सुबह की धूप धीरे-धीरे गाँव पर फैल रही थी।

हवा में हल्की ठंडक थी—

और रात का सन्नाटा अब पूरी तरह टूट चुका था।

मेघा की आँख खुली—

आज उसके मन में एक अलग-सी हलचल थी।

रात का अधूरा प्लान…

हवेली…

और मामा की बात—

खुद खोजना होगा…

वह उठकर बाहर आई।

आँगन में मामा और नाना जी तैयार खड़े थे—

चलो, खेतों की तरफ चलते हैं, मामा ने कहा।

मेघा तुरंत तैयार हो गई—

तीनों गाँव से बाहर निकलकर अपने खेतों की ओर बढ़ने लगे।

खेत सामने फैले हुए थे—

पर इस समय वे खाली थे।

न कोई फसल…

न कोई हरियाली—

बस सूखी मिट्टी—

जैसे अगली फसल के लिए चुपचाप इंतज़ार कर रही हो।

मेघा कुछ देर तक उन खेतों को देखती रही—

फिर अचानक बोली—

मामा…

हूँ? मामा ने जवाब दिया।

कल आपने कहा था… कि मुझे खुद खोजना होगा…

वह थोड़ा रुकी—

पर आप ही बता दीजिए ना…

क्या भूत होते हैं या नहीं?

मामा ने शांत स्वर में कहा—

असली खोज… हमेशा खुद ही करनी पड़ती है।

मेघा ने थोड़ा सा मुँह बनाया—

आप सीधे जवाब क्यों नहीं देते?

मामा ने उसकी ओर देखा—

क्योंकि कुछ बातें बताने से नहीं…

समझने से आती हैं।

तीनों धीरे-धीरे चलते हुए खेत के बीच तक पहुँच गए।

वहीं उनके खेत में एक बड़ा-सा बरगद का पेड़ था—

उसकी घनी छाया ज़मीन पर फैली हुई थी।

तुम दोनों इस पेड़ की छाँव में बैठ जाओ , नाना जी ने कहा।

मैं पास वाले खेत में अपने मित्र के पास जा रहा हूँ।

हवा अब और भी ठंडी लग रही थी—

चारों तरफ शांति थी—

और वही शांति—

जैसे सोचने को मजबूर कर रही थी।

मेघा ने कुछ पल चुप रहने के बाद कहा—

मामा…

आपने कल कहा था… 'दर्शन'…

दर्शन का मतलब तो देखना होता है ना ?

मामा ने हल्का सा मुस्कुराकर कहा—

हाँ… सरल शब्दों में कहें तो यही है—देखना।

फिर थोड़ी देर रुककर बोले—

पर सिर्फ आँखों से देखना नहीं…

बल्कि समझ से देखना…

सच्चाई को देखना… और उसे खोजने की कोशिश करना।

मेघा ध्यान से सुन रही थी—

उसने एक बार फिर चारों तरफ देखा—

खाली खेत…

शांत हवा…

और वह बरगद का पेड़—

जैसे हर चीज़ कुछ कह रही हो—

बस उसे समझने की जरूरत हो।

और वहीं—

दर्शन की असली यात्रा शुरू हो चुकी थी।

प्रश्न — सोच की शुरुआत

बरगद की छाया में बैठकर—

कुछ देर तक दोनों चुप रहे।

और खेतों की खाली ज़मीन जैसे किसी प्रतीक्षा में थी।

मेघा ने धीरे से पूछा—

मामा… अगर दर्शन सच्चाई को देखने की कोशिश है…

तो लोगों ने इसे कैसे शुरू किया?

मामा ने उसकी ओर देखा—

बहुत पहले, उन्होंने कहा,

कुछ लोग ऐसे थे… जिन्हें हर बात पर सवाल करना अच्छा लगता था।

जैसे तुम? उन्होंने हल्के से कहा।

मेघा मुस्कुराई—

थोड़ा-सा…

मामा बोले—

ऐसे ही एक व्यक्ति थे—सुकरात।

उन्होंने लोगों से सवाल पूछना शुरू किया।

किस तरह के सवाल? मेघा ने पूछा।

बहुत सरल… पर गहरे, मामा बोले—

जैसे—

सही क्या है?

गलत क्या है?

सच क्या है?

और जब लोग जवाब देते…

तो वह फिर सवाल पूछते...

जब तक कि सामने वाला खुद ही सोचने पर मजबूर न हो जाए।

मेघा ने तुरंत कहा—

मतलब... वो सीधे जवाब नहीं देते थे ?

मामा ने हल्का सा सिर हिलाया—

नहीं...

वह लोगों को खुद सोचने के लिए प्रेरित करते थे।

मेघा कुछ पल चुप रही—

फिर बोली—

थोड़ा आपके जैसा...

मामा हल्का-सा मुस्कुराए—

शायद...

मामा ने आगे कहा—

फिर उनके शिष्य आए—अरस्तू।

उन्होंने चीज़ों को समझने की कोशिश की...

प्रकृति को...

जीवन को...

और सोचने के तरीके को।

मतलब... उन्होंने जवाब ढूँढ़ने की कोशिश की ? मेघा ने पूछा।

हाँ, मामा बोले—

उन्होंने कहा कि दुनिया को समझने के लिए हमें

देखना... सोचना... और कारण ढूँढ़ना चाहिए।

मेघा ने चारों तरफ देखा—

खेत…

पेड़…

हवा…

मतलब… जो हम देख रहे हैं… उसी से समझना ? उसने पूछा।

मामा ने कहा—

हाँ… पर सिर्फ देखना नहीं…

यह भी समझना कि जो दिख रहा है…

क्या वही पूरा सच है ?

मेघा थोड़ी चुप हो गई—

उसे रात का सपना याद आया…

और हवेली।

मामा… उसने धीरे से कहा—

अगर जो हम देखते हैं… वही सच नहीं है…

तो फिर सच क्या है ?

मामा ने उसकी ओर देखा—

यही सवाल… दर्शन का सबसे बड़ा सवाल है।

हवा फिर से चली—

और खेतों की सूखी मिट्टी जैसे हल्के से हिल उठी।

मेघा अब सिर्फ सुन नहीं रही थी—

वह सोच रही थी।

और पहली बार—

उसे महसूस हुआ कि

सवाल… डरावने नहीं होते—

बल्कि रास्ता दिखाते हैं।

दृष्टि — जो दिखता है और जो होता है

बरगद की छाया अब और ठंडी लगने लगी थी।

खेतों की सूखी मिट्टी पर हल्की-सी लहर-सी उठ रही थी।

मेघा अभी भी सोच में डूबी थी—

मामा… उसने धीरे से कहा—

अगर हर चीज़ को समझना इतना मुश्किल है…

तो क्या कोई ऐसा तरीका नहीं है…

जिससे हम सच को आसानी से जान सकें ?

मामा ने हल्का सा सिर हिलाया—

लोगों ने यही कोशिश की है… अलग-अलग तरीकों से।

जैसे ? मेघा ने पूछा।

मामा बोले—

कुछ दार्शनिकों ने कहा—

कि जो हम अपनी इंद्रियों से देखते हैं…

वह हमेशा पूरा सच नहीं होता।

मेघा ने तुरंत कहा—

मतलब… जो दिख रहा है… वो गलत भी हो सकता है ?

हाँ, मामा बोले—

कभी-कभी हमारा मन…

हमें वही दिखाता है… जो हम देखना चाहते हैं।

मेघा को अपना सपना याद आया—

और हवेली भी।

वह चुप हो गई।

मामा ने आगे कहा—

भारत में भी ऐसे विचार आए…

जहाँ कुछ दार्शनिकों ने कहा—

कि यह दुनिया… जैसी हमें दिखाई देती है…

वैसी पूरी तरह सच नहीं है।

मेघा ने थोड़ा चौंककर पूछा—

मतलब… यह सब सच नहीं है ?

मामा ने कहा—

इसे समझने के लिए एक शब्द है—‘माया’।

मेघा ने धीरे से दोहराया—

माया…

मामा बोले—

माया का मतलब यह नहीं कि दुनिया है ही नहीं…

बल्कि यह कि हम उसे पूरी तरह सही तरीके से नहीं देख पाते।

जैसे ? मेघा ने पूछा।

मामा ने ज़मीन पर पड़ी एक रस्सी उठाई—

अगर अँधेरे में यह रस्सी पड़ी हो…

तो तुम्हें क्या लग सकता है ?

शायद साँप…

पर असल में ? मामा ने पूछा।

रस्सी , मेघा ने कहा।

मामा ने सिर हिलाया—

यही माया है।

जो दिख रहा है… वह हमेशा वैसा नहीं होता जैसा हम समझते हैं।

मेघा कुछ देर तक उस रस्सी को देखती रही—

जैसे वह अब उसे नए तरीके से देख रही हो।

तो… हम कैसे जानेंगे कि क्या सच है ? उसने पूछा।

मामा ने कहा—

यही खोज… दर्शन की असली यात्रा है।

हवा फिर से चली—

बरगद के पत्ते हिले—

और उनके नीचे बैठी मेघा—

अब सिर्फ सुन नहीं रही थी—

बल्कि समझने की कोशिश कर रही थी।

दृष्टिकोण — सच किसका ?

बरगद के पेड़ की छाया में बैठी मेघा अब ज़मीन पर उंगली से कुछ रेखाएँ बना रही थी। और चारों तरफ वही शांत वातावरण—

पर उसके मन में अब हलचल थी।

मामा… उसने धीरे से कहा—

अगर हम चीज़ों को सही से देख ही नहीं पाते…

तो क्या हर किसी के लिए सच अलग होता है ?

मामा ने उसकी ओर देखा—

तुम्हें क्या लगता है ? उन्होंने पूछा।

मेघा ने थोड़ा सोचा—

शायद... हाँ।

क्योंकि हर कोई अलग सोचता है।

मामा ने सिर हिलाया—

कुछ दार्शनिकों ने भी यही कहा था।

कौन ? मेघा ने पूछा।

मामा बोले—

कुछ लोग मानते थे कि सच... हर व्यक्ति के लिए अलग हो सकता है।

जैसे—जो तुम्हें सही लगे... वही तुम्हारा सच।

मेघा ने तुरंत कहा—

पर ऐसा होगा तो सब अपने-अपने हिसाब से सही हो जाएँगे !

मामा ने हल्का-सा मुस्कुराकर कहा—

यही समस्या भी है।

अगर हर किसी का अपना-अपना सच हो...

तो सही और गलत का फर्क कैसे समझेंगे ?

मेघा चुप हो गई।

उसे यह बात थोड़ी उलझी हुई लगी।

मामा ने पास पड़ी मिट्टी उठाई—

मान लो, उन्होंने कहा—

यह मिट्टी तुम्हारे लिए सिर्फ मिट्टी है...

पर किसी किसान के लिए ?

फसल, मेघा ने कहा।

और किसी बच्चे के लिए ?

खेलने की चीज़, मेघा ने मुस्कुराकर कहा।

मामा ने कहा—

तीनों के लिए वही चीज़ है…

पर अर्थ अलग-अलग।

मेघा ने धीरे से कहा—

मतलब… चीज़ वही है…

पर देखने का तरीका अलग है।

हाँ, मामा बोले—

इसे ही दृष्टिकोण कहते हैं।

तो क्या सच कभी बदलता है ? मेघा ने पूछा।

मामा कुछ क्षण चुप रहे—

फिर बोले—

कुछ चीज़ें ऐसी होती हैं… जो नहीं बदलतीं।

और कुछ ऐसी… जो हमारे देखने से बदल जाती हैं।

मेघा ने उनकी ओर देखा—

जैसे ?

मामा ने कहा—

जैसे सूरज…

वह है—यह सच है।

पर वह सुबह लाल क्यों लगता है…

और दोपहर में सफेद क्यों ?

मेघा ने कहा—

क्योंकि हम उसे अलग-अलग समय पर अलग तरह से देखते हैं।

बिल्कुल, मामा बोले।

तो क्या सूरज बदलता है…

या हमारा देखने का तरीका ?

मेघा चुप हो गई—

अब उसके चेहरे पर उलझन कम थी—

और समझ थोड़ी बढ़ रही थी।

तो… सच दो तरह का हो सकता है ? उसने पूछा—

एक जो है…

और एक जो हमें दिखता है ?

मामा ने सिर हिलाया—

तुम सही दिशा में सोच रही हो।

मेघा ने एक बार फिर चारों तरफ देखा—

खेत…

पेड़…

हवा…

सब कुछ वही था—

पर अब उसे लग रहा था—

कि शायद…

वह उन्हें पहली बार सच में देख रही है।

जिज्ञासा — ज्ञान की शुरुआत

बरगद की छाया अब धीरे-धीरे छोटी होने लगी थी।

सूरज ऊपर चढ़ चुका था—

और दोपहर की गर्मी अब महसूस होने लगी थी।

मेघा अब भी सोच में डूबी थी—

पर उसके चेहरे पर अब उलझन कम…

और जिज्ञासा ज़्यादा थी।

कुछ पल की चुप्पी के बाद—

उसने मामा की ओर देखा और पूछा—

मामा…

आपको इतना सब कैसे पता है ?

मामा हल्का-सा मुस्कुराए—

पहले… मैं बहुत ज़्यादा किताबें पढ़ता था, उन्होंने कहा।

अब थोड़ा कम पढ़ता हूँ…

पर आदत अभी भी गई नहीं है।

मेघा ने उत्सुकता से पूछा—

कैसी किताबें ?

मामा बोले—

खासकर दर्शन की…

कॉलेज में मेरा विषय भी दर्शन ही था।

मेघा की आँखों में चमक आ गई—

सच में ?

हाँ, मामा ने कहा—

फिर अचानक उसे कुछ याद आया—

मामा…

हाँ ? मामा ने कहा।

मुझे आज रात... हवेली देखने जाना है।

मामा ने उसकी ओर देखा—

कुछ पल चुप रहे—

फिर बोले—

अच्छा... तो यही बात है।

मेघा ने थोड़ा हँसते हुए कहा—

हाँ...

मामा ने धीरे से कहा—

ठीक है... कुछ करते हैं।

मेघा तुरंत बोली—

लेकिन... नानी को पता नहीं चलना चाहिए।

मामा ने हल्का-सा मुस्कुराकर कहा—

तो फिर... योजना भी वैसी ही बनानी पड़ेगी।

तब तक नाना जी भी वहां आ गए थे।

फिर तीनों धीरे-धीरे घर की ओर लौटने लगे।

अब दोपहर पूरी तरह फैल चुकी थी—

धूप तेज़ थी—

पर मेघा के मन में अब एक अलग ही उत्साह था—

रात का इंतज़ार...

और एक नया अनुभव।

हवेली — डर के उस पार

शाम धीरे-धीरे उतर आई थी।

आसमान का रंग नीले से गहरे धूसर में बदल रहा था—

और गाँव की हलचल अब कम होने लगी थी।

पर मेघा के मन में हलचल बढ़ रही थी।

रात का इंतज़ार…

खाना जल्दी-जल्दी खत्म हुआ।

जैसा तय हुआ था—

मेघा ने नानी से कहा—

नानी, मैं मानसी के घर पढ़ने जा रही हूँ।

नानी ने कहा—

ठीक है, ज्यादा देर मत करना।

उधर मामा ने सहजता से कहा—

मैं ज़रा एक मित्र के पास होकर आता हूँ।

नानी ने बिना ज्यादा ध्यान दिए सिर हिला दिया।

कुछ ही देर बाद—

तीनों चुपचाप गली से बाहर निकल गए।

रात अब गहरा चुकी थी।

आसमान में तारे थे—

पर नीचे… अंधेरा।

हवेली दूर से ही अलग दिखाई दे रही थी—

काली… खामोश…

जैसे किसी का इंतज़ार कर रही हो।

जैसे-जैसे वे पास पहुँचे—

हवा ठंडी होती गई।

अचानक—

चर्र…

हवेली की टूटी खिड़की अपने आप हिली।

मानसी एकदम रुक गई—

सुना ? उसने धीमे से कहा।

मेघा का दिल तेज़ धड़कने लगा—

हाँ…

मामा पीछे खड़े थे—

चुप… बिना कुछ कहे।

तीनों धीरे-धीरे हवेली के पास पहुँचे।

दरवाज़ा आधा टूटा हुआ था—

अंदर पूरा अंधेरा।

मानसी ने तुरंत कहा—

मुझे नहीं जाना अंदर।

मेघा ने उसकी ओर देखा—

अभी तो कह रही थी डरपोक नहीं हूँ…

मानसी ने कुछ नहीं कहा—

बस पीछे हट गई।

मेघा ने गहरी साँस ली—

और धीरे-धीरे अंदर कदम रखा।

अंदर घुप्प अंधेरा था।

टूटी दीवारें...

जालों से भरे कोने...

और एक अजीब-सी गंध।

कहीं से हल्की-सी आवाज़ आई—

टक... टक...

मेघा कुछ पल के लिए रुक गई—

उसकी साँस तेज़ हो गई।

उसने चारों तरफ देखने की कोशिश की—

पर साफ़ कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

सिर्फ अंधेरा।

कुछ देर बाद—

वह बाहर आ गई।

मानसी तुरंत उसके पास आई—

क्या देखा ?

मेघा ने धीरे से कहा—

कुछ भी नहीं...

मामा अब भी वहीं खड़े थे—

उन्होंने शांत स्वर में पूछा—

डर लगा ?

मेघा ने कुछ पल सोचा—

फिर कहा—

अंदर जाते समय... हाँ...

पर अब... नहीं।

मामा ने उसकी ओर देखा—

क्यों ?

मेघा ने धीरे से कहा—

क्योंकि... वहाँ कुछ था ही नहीं।

मामा ने हल्की-सी मुस्कान के साथ कहा—

डर... अक्सर बाहर नहीं होता...

वह हमारे अंदर होता है।

हवा हल्की चली—

हवेली अब पहले जैसी डरावनी नहीं लग रही थी।

मेघा ने एक बार फिर उसकी ओर देखा—

अब वह बस एक पुरानी इमारत थी।

न कोई परछाई...

न कोई रहस्य...

सिर्फ एक भ्रम।

और उसी के साथ—

मेघा के अंदर कुछ बदल गया था।

अध्याय 5
स्वयं की यात्रा : जब खोज बाहर से हटकर भीतर मुड़ती है... और सब कुछ बदलने लगता है।

मेला — भीड़ में अकेलापन

सुबह की धूप आज कुछ अलग थी।

गाँव में हलचल ज़रा ज़्यादा थी—

गली से लोगों के आने-जाने की आवाज़ें,

बच्चों की हँसी,

और कहीं दूर से ढोल की हल्की-सी थाप।

मेघा की आँख खुली—

आज इतना शोर क्यों है ? उसने धीरे से पूछा।

मामी की आवाज़ बाहर से आई—

अरे ! आज मेला लगा है !

मेघा तुरंत उठ बैठी—

मेला ?

वह जल्दी से बाहर आई।

आँगन में नानी, मम्मी और मानसी तैयार खड़ी थीं।

चलो, देर हो जाएगी, मानसी ने उत्साह से कहा।

मेघा भी तैयार हो गई—

और थोड़ी ही देर में सब मेले की ओर निकल पड़े।

गाँव के बाहर एक बड़ा-सा मैदान—
जहाँ चारों तरफ रंग ही रंग थे।
झूले घूम रहे थे—
ऊपर-नीचे, गोल-गोल।
बच्चे हँस रहे थे,
कोई गुब्बारे बेच रहा था,
कहीं जलेबियों की खुशबू हवा में घुल रही थी।
मिट्टी के खिलौनों की दुकानें—
छोटे-छोटे घोड़े,
हाथी,
और रंग-बिरंगे बर्तन।
मानसी तो जैसे रुक ही नहीं रही थी—
चलो झूला !
चलो गोलगप्पे !
चलो उधर !
मेघा उसके साथ चल तो रही थी—
पर उसके भीतर कुछ अलग चल रहा था।
चारों तरफ इतनी भीड़ थी—
पर फिर भी—
उसे अजीब-सा अकेलापन महसूस हो रहा था।
क्या हुआ ? मानसी ने पूछा—
कुछ नहीं… मेघा ने कहा।
दोनों झूले पर बैठीं—

झूला ऊपर उठा—

हवा तेज़ लगी—

मानसी हँस रही थी—

पर मेघा…

बस देख रही थी।

नीचे लोग छोटे लग रहे थे—

सब कुछ घूम रहा था—

और अचानक—

उसे लगा…

क्या यह सब सच में है ?

या बस एक अनुभव है…

जो कुछ देर बाद खत्म हो जाएगा ?

झूला रुक गया।

मानसी ने कहा—

मज़ा आया ना ?

मेघा ने हल्की मुस्कान दी—

हाँ…

पर उसके अंदर सवाल अब भी थे।

फिर दोनों ने गोलगप्पे खाए कुछ चाट खाई।

चारों तरफ लोग थे—

खुश… व्यस्त…

अपनी-अपनी दुनिया में।

पर मेघा—

अब भी जैसे कहीं और थी।

उसने एक बार चारों तरफ देखा—

इतनी सारी चीज़ें…

इतने सारे लोग…

पर सब कुछ जैसे बदलता हुआ…

क्षणिक।

चलें ? मम्मी ने कहा।

दोपहर हो चुकी थी—

धूप अब तेज़ थी।

सब धीरे-धीरे घर की ओर लौटने लगे।

मानसी रास्ते भर बातें करती रही—

पर मेघा चुप थी।

अब उसके अंदर एक अजीब-सी बेचैनी थी—

जैसे कुछ समझ में आने वाला है…

पर अभी आया नहीं।

बेचैनी — भीतर की पुकार

दोपहर की धूप अब धीमी पड़ने लगी थी।

घर लौटकर सब अपने-अपने काम में लग गए—

नानी रसोई में,

मम्मी कुछ समेटने में,

और मानसी अपने घर चली गई।

पर मेघा…

वह न बैठ पा रही थी,

न कुछ करने का मन था।

वह कभी आँगन में टहलती,

कभी चारपाई पर बैठती—

पर उसे खुद समझ नहीं आ रहा था—

कि उसे हो क्या रहा है।

कुछ देर बाद—

वह उठी और मामा के पास चली गई।

मामा… मेघा ने धीरे से कहा।

हूँ… मामा ने उसकी ओर देखा।

मेरा मन… बहुत बेचैन हो रहा है।

मामा ने उसे ध्यान से देखा—

क्यों ? उन्होंने पूछा।

मेघा कुछ पल चुप रही—

पता नहीं…

आज मेले में भी…

सब कुछ ठीक था…

पर फिर भी… कुछ ठीक नहीं लग रहा था।

मामा कुछ नहीं बोले—

बस सुनते रहे।

ऐसा लग रहा है… मेघा ने कहा—

जैसे मैं सब देख तो रही हूँ…

पर समझ नहीं पा रही…

कि सच क्या है…

बरामदे में एक अजीब-सी शांति फैल गई।

मामा ने धीरे से कहा—

जब मन ऐसे सवाल पूछने लगे…

तो इसका मतलब है…

कि तुम बाहर से अंदर की तरफ बढ़ रही हो।

मेघा ने उनकी ओर देखा—

मतलब ?

मामा उठे—

चलो, उन्होंने कहा।

कहाँ ? मेघा ने पूछा।

तुम्हें नदी दिखाता हूँ, मामा बोले।

दोनों घर से बाहर निकले—

गाँव के रास्ते से होते हुए—

धीरे-धीरे उस दिशा में बढ़ने लगे

जहाँ से ठंडी हवा आ रही थी।

दूर—

एक नदी बह रही थी।

उसकी आवाज़ हल्की-हल्की सुनाई देने लगी।

मेघा ने उस ओर देखा—

और बिना कुछ कहे—

मामा के साथ चलती रही।

अब—

उसकी बेचैनी धीरे-धीरे...

एक खोज में बदल रही थी।

नदी — जहाँ सब शांत हो जाता है

नदी अब बिल्कुल सामने थी।

पानी धीरे-धीरे बह रहा था—

न कोई जल्दी...

न कोई शोर...

बस एक निरंतर ध्वनि—

सरर... सरर...

नदी के किनारे एक बड़ा-सा पीपल का पेड़ था—

उसकी घनी छाया ज़मीन पर फैली हुई थी।

मामा और मेघा उसी पेड़ की छाँव में जाकर बैठ गए—

सामने बहती नदी...

ऊपर हिलते पत्ते...

और चारों तरफ गहरी शांति।

मेघा कुछ पल वहीं बैठी रही—

फिर धीरे-धीरे पानी की ओर देखने लगी।

लहरें आ रही थीं...

जा रही थीं...

बिना रुके।

मामा... उसने धीरे से कहा—

यह पानी... कभी रुकता क्यों नहीं ?

मामा ने उसकी ओर देखा—

अगर रुक जाए… उन्होंने कहा—

तो नदी, नदी ही नहीं रहेगी।

मेघा कुछ पल चुप रही—

फिर बोली—

मेरा मन भी ऐसा ही है…

लगातार चलता रहता है…

मामा ने हल्का-सा सिर हिलाया—

हाँ… मन भी ऐसा ही होता है।

हमेशा कुछ न कुछ सोचता रहता है…

और उसी में उलझा रहता है।

मेघा ने धीरे से पूछा—

तो इसे रोका कैसे जाए ?

मामा ने कहा—

रोको मत…

बस देखो।

मेघा ने उनकी ओर देखा—

देखो ?

हाँ, मामा बोले—

जैसे तुम इस नदी को देख रही हो…

वैसे ही अपने मन को देखो।

मेघा चुप हो गई।

उसने फिर नदी की ओर देखा—

फिर धीरे से आँखें बंद कर लीं।

विचार आए...

मेला...

हवेली...

सपना...

पर इस बार—

उसने उन्हें रोका नहीं।

बस देखा।

धीरे-धीरे—

विचार आते गए...

और चले गए—

जैसे नदी की लहरें।

और फिर—

एक पल ऐसा आया—

जब अंदर कुछ भी नहीं था।

न कोई विचार...

न कोई आवाज़...

बस शांति।

गहरी... स्थिर...

अंदर तक उतरती हुई।

मेघा ने धीरे से आँखें खोलीं।

पीपल के पत्ते हवा में हिल रहे थे—

नदी बह रही थी—

सब कुछ वही था।

पर कुछ बदल गया था।

बाहर नहीं…

भीतर।

मामा… उसने बहुत धीरे से कहा—

अभी… कुछ अलग लगा…

मामा ने पूछा—

कैसा ?

मेघा शब्द नहीं ढूँढ़ पाई—

बस… शांति…

मामा ने हल्के –से कहा—

यही शुरुआत है।

मेघा फिर नदी को देखने लगी—

अब उसे समझ नहीं आ रहा था—

कि वह नदी को देख रही है…

या खुद को।

साक्षी — जो देखता है, वह कौन है ?

नदी अपनी गति से बह रही थी—

और उस शांति में…

कुछ और भी था—

जो शब्दों में नहीं था।

मेघा अब पहले जैसी नहीं थी।

उसके चेहरे पर एक अलग-सी स्थिरता थी—

मामा... उसने धीरे से कहा—

अभी जो हुआ...

वह क्या था ?

मामा ने नदी की ओर देखते हुए कहा—

जब तुमने अपने विचारों को रोका नहीं...

बस उन्हें देखा...

तो तुम अपने मन से थोड़ा अलग हो गईं।

मेघा ने ध्यान से सुना—

मतलब ?

मामा बोले—

अब तक तुम अपने विचारों को ही 'मैं' मानती थी...

जो सोच रही हूँ... वही मैं हूँ।

पर अभी...

तुमने देखा कि विचार तो आते-जाते हैं...

और तुम... उन्हें देख सकती हो।

मेघा कुछ पल चुप रही—

फिर धीरे से बोली—

तो... मैं विचार नहीं हूँ ?

मामा ने उसकी ओर देखा—

यही समझना अध्यात्म की शुरुआत है।

बहुत समय पहले, मामा ने कहा—

एक राजकुमार थे — सिद्धार्थ गौतम।

उनके पास सब कुछ था…

पर फिर भी उनके मन में सवाल था—

दुख क्यों है ?

उन्होंने सब छोड़ दिया…

और सच की खोज में निकल पड़े।

मेघा ध्यान से सुन रही थी—

उन्होंने भी पहले बहुत कुछ समझने की कोशिश की…

पर जब तक वे सिर्फ सोचते रहे…

उन्हें जवाब नहीं मिला।

फिर एक दिन…

वे एक पेड़ के नीचे बैठे…

और सिर्फ देखने लगे—

अपने मन को।

मेघा ने धीरे से पूछा—

फिर ?

मामा बोले—

धीरे-धीरे…

उनका मन शांत हो गया…

और तब उन्हें अनुभव हुआ…

कि असली 'मैं' वह नहीं है जो सोचता है…

बल्कि वह है… जो देखता है।

मेघा ने आँखें बंद कर लीं—

जैसे वह उस बात को महसूस करना चाहती हो।

कुछ पल बाद—

उसने धीरे से कहा—

तो... जो अभी मैं महसूस कर रही थी...

वह वही था ?

मामा ने कहा—

बस शुरुआत...

पर रास्ता सही है।

नदी बह रही थी—

पर अब—

मेघा के अंदर कुछ स्थिर था।

उसे अब समझ आ रहा था—

कि हर सवाल का जवाब शब्दों में नहीं होता...

कुछ जवाब—

बस अनुभव में मिलते हैं।

मुक्ति — अंतिम प्रश्न, अनंत उत्तर

नदी अपनी धारा में बहती जा रही थी—

पर अब मेघा के भीतर...

कुछ रुक गया था।

न कोई भाग-दौड़...

न कोई उलझन...

बस एक शांत-सा विस्तार।

मेघा कुछ देर तक उसी शांति में बैठी रही—
फिर उसने धीरे से आँखें खोलीं।
उसने मामा की ओर देखा—
मामा…
हूँ? मामा ने शांत स्वर में कहा।
अभी जो मैं महसूस कर रही हूँ…
क्या मैं हमेशा ऐसा महसूस कर सकती हूँ?
मामा ने उसकी ओर देखा—
उनकी आँखों में एक गहराई थी—
जैसे वे जवाब जानते हों…
पर फिर भी सीधे न कहें।
इसे ही… उन्होंने धीरे से कहा—
लोग 'मुक्ति' कहते हैं।
मेघा ने धीरे से दोहराया—
मुक्ति…
जब मन की उलझनें खत्म हो जाती हैं…
और तुम अपने असली स्वरूप में स्थिर हो जाती हो…
वही मुक्ति है।
मेघा ध्यान से सुन रही थी—
और जब यह शांति…
सिर्फ कुछ पल के लिए नहीं…
बल्कि हमेशा बनी रहे…
उसे 'समाधि' कहते हैं।

चारों तरफ शांति थी—

जैसे प्रकृति भी इस बात को सुन रही हो।

मेघा कुछ देर चुप रही—

फिर धीरे से बोली—

क्या... मैं भी मुक्त हो सकती हूँ?

मामा ने उसकी ओर देखा—

कुछ नहीं कहा—

बस हल्का-सा मुस्कुरा दिए।

नदी बहती रही...

हवा चलती रही...

और उस क्षण—

जवाब शब्दों में नहीं था।

बल्कि...

शांति में था।

------------------------------अंत : अस्ति प्रारंभ : -------------------------